चिल्ड्रन पार्क की आत्म कथा

मैं चिल्ड्रन पार्क हूँ. आप मुझे बाल उद्यान भी कह सकते हैं. मेरी स्थापना कभी चिल्ड्रन प्ले ज़ोन के नाम से हुई थी, पर लोग मुझे सिदगोडा चिल्ड्रेन पार्क कह कर पुकारते हैं. सूर्य मंदिर परिसर का चिल्ड्रेन पार्क से भी लोग मुझे जानते हैं. मैं फिर से गुलज़ार हुआ हूँ, नये कलेवर के साथ. कुछ पुराने और कुछ नए उपस्कर जोड़कर मुझे पुनर्जीवित किया गया है. मेरा पुनरुद्धार हुआ है. मैं खुश हूँ. मेरे प्रांगण में फिर से बच्चे–बच्चियों, नन्हे–मुन्नों की कल–कल होगी यह उम्मीद मैंने छोड़ दिया था. मुझे बेरहमी से विस्थापित कर दिया गया था. मेरे अंग–प्रत्यंग उखाड़ दिये गये थे. उन्हें बेतरतीब फेंक दिया गया था. मैं सिसकियाँ भर रहा था. पुनर्जीवन की उम्मीद छोड़ दी थी मैंने. पर नये रंग रूप के साथ सहसा पुनः अवतरित होने पर मुझे सहज विश्वास नहीं हो रहा है, आश्चर्य हो रहा है. कहा जाता है न, आश्चर्यजनक किंतु सत्य. इसी स्थिति से गुजर रहा हूँ मैं. रह रह कर पुरानी यादें ताज़ा हो रही हैं. स्थापना से पुनर्जीवन के बीच के काल खंड में मेरे साथ और मेरे आसपास क्या कुछ घटा है उसकी एक झलक आपके सामने रखना चाहता हूँ. अपनी खुशी आपके साथ बाँटना चाहता हूँ. यह अब तक की मेरी आत्म कथा भी है और आत्म व्यथा भी.

वह समय था जब दुनिया कोविड के प्रकोप से जूझ रही थी. जमशेदपुर भी इससे अछूता नहीं था. मैं अपने आप में खोया हुआ था. अचानक मेरे प्रांगण में नौनिहालों का आना थम गया. वीरानी छा गई मुझपर. मुझे कोविड के बारे में बताया गया. कहा गया कि कोविड–2019 के कारण दुनिया की रफ्तार थम गयी है. उस समय तक मेरे यहाँ आने वालों से प्रतिव्यक्ति 5 रुपया शुल्क के रूप में वसूला जाता था. शुल्क देकर आनेवाले अक्सर ज़िक्र करते थे कि सूर्य मंदिर के गेट पर टिकट काटने वाले बैठते हैं. उसके बाद के एक गेट पर टिकट चेक करने वाले बैठते हैं. बिना टिकट किसी का प्रवेश संभव नहीं है. मनोरंजन के लिए मेरे प्रांगण में आने वाले बच्चों को तो टिकट देना ही पड़ता है, उनके साथ आनेवाले अभिभावकों से भी टिकट वसूली होती है. वे अक्सर चर्चा करते थे कि मेरे यहाँ तक पहुँचने के पहले एक उद्यान है. उद्यान में विचरण करने वालों को 5 रूपये का शुल्क अलग से चुकाना पड़ता है. उसके बाद जो मेरे प्रांगण तक पहुँचना चाहता है उसे अतिरिक्त 5 रुपया देना पड़ता है. दोनों मिलाकर 10 रुपया चुकाना पड़ता है तब कोई मुझ तक पहुँच पाता है. मेरे पास पहुँचकर बच्चे तो क्रीड़ा के आनन्द में मशगूल हो जाते थे. अठखेलियों में गुम हो जाते थे. परंतु उनके अभिभावकों को रोज़ाना 10 रूपये चुकाना खलता था. वे कोसते थे ऐसी व्यवस्था को. आश्चर्य करते थे कि इन टिकटों पर सूर्य भगवान के

नाम पर स्थापित एक संस्था, तथाकथित धार्मिक संस्था का नाम अंकित रहता है। नाम धार्मिक, पर काम व्यवसायिक.

कोविड काल की वीरानी से मैं परेशान हो गया. मेरी देखरेख पर ताला लग गया. कोविड का वीरानापन भोग ही रहा था कि एक दिन मेरे प्रांगण में हलचल हुई. देखा कि कई लोग हरवे–हथियार के साथ पहुँचे हैं. मुझे लगा कि ये लोग कोविड से बिगड़ी मेरी सूरत को संवारने के लिए आए होंगे. मैं प्रसन्न हुआ कि मेरे प्रांगण में फिर से रौनक होगी. बच्चे–बच्चियों की निश्छल खिलखिलाहट यहाँ गूंजेगी. मेरा वीरानापन दूर होगा. मैं बच्चों की मासूमियत से, उनकी अठखेलियों से रू–ब–रू होकर आह्लादित होउंगा. उनके माता–पिता, अभिभावकों की गप गोष्ठियाँ मेरे किनारों पर फिर जमने लगेंगी. उनकी घरेलू चटपटी बातों का, आस पड़ोस से लेकर देश दुनिया के उनके सामान्य ज्ञान का रसास्वादन करूँगा. मैं मन ही मन मुदित हो रहा था कि मेरी जड़ मन, मेरा अचल अस्तित्व, मेरा यांत्रिक स्वरूप बाल सुलभ चंचलता की नैसर्गिकता से ओत–प्रोत होगा.

पर यह क्या ! इस छोटे से जन समूह ने तो मुझ पर आघात शुरू कर दिया. साथ लाए औज़ारों से ये लोग मेरा अंग–प्रत्यंग छलनी करने लगे, मुझे छिन्न–भिन्न करने लगे, मुझ पर मर्मांतक प्रहार करने लगे. उन्होंने मुझे धराशायी कर दिया. मेरा अंजर पंजर ढीला कर दिया, नस नस छिटका दिया. मेरा जड़ मन कराहने लगा. मैं तो अजीब हूँ, संसार की किसी योनि में मेरा स्थान नहीं है. पर संसार की 84 लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ कहे जाने वाले मनुष्य की ऐसी हरकत ने मुझे शर्मसार कर दिया. अभी तक मैं बाल सुलभ नैसर्गिक संवेदनाओं से ही परिचित था. पर इस मानव समूह की इस अमानवीय हरकत ने मुझे मनुष्य में निहित स्वार्थी जैविक संस्कारों के क्रूर पहलुओं से अवगत करा दिया. इस आततायी जनसमूह ने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा.

ऐसा नहीं कि इसके पहले मैं मनुष्य के प्रहारों से परिचित नहीं था. मेरे अस्तित्व को आकार देने वाले विश्वकर्मा के वंशजों ने मेरे अंग–प्रत्यंगों को सजाने के लिए, मुझे विविधता भरा मनोवांछित आकार देने के लिए आग की तपिश, हथौड़ों का प्रहार, छेनी–हथौड़ी की खुटखुट, आरियों एवं सूक्ष्म–स्थूल कटिंग मशीनों की यांत्रिक धार से गुज़ारा था. वे भी वेदना के क्षण थे. तब भी कष्ट महसूस हुआ था मुझे, पर इस वेदना में आनन्द की अनुभूति थी, सुकुन था. यह वेदना निर्माण की थी. यह काम जोड़ने का था. मुझे एक सार्थक स्वरूप देने का था. मानव के स्वेद कणों से, कारीगरों की कुशल कारीगरी से, उनकी रचनात्मकता से, कला की सार्थकता से, तोड़–

मरोड़कर जोड़े जाने की मनःस्थिति से परिचित होने का वह क्षण आनन्द अनुभूति कराने वाला था. प्रसव पीड़ा की तरह.

पर इस निहित स्वार्थी आततायी समूह की क्रूरता ने तो मुझे भीतर तक झकझोर दिया, अंदर तक तोड़ दिया. एक कलाकृति के कबाड़ बनने की यह प्रक्रिया कितना दुखदायी थी इसका वर्णन करना मेरे लिए कठिन है, थोड़ा कहना और ज़्यादा समझना की परख रखने वालों की संवेदना ही मेरे इस कष्ट का अनुभव कर सकती है. मैं बिखर गया, टूट गया, छिन्न–भिन्न हो गया. कुछ बचा, बहुत कुछ नष्ट हो गया, टूट–फूट गया. अपने मूल स्थान से विस्थापित कर दिया गया मैं.

मैं तो कूड़ा–कबाड़ में तब्दील होने ही वाला था कि कतिपय संवेदनशील युवकों की नज़र मेरे विनष्ट किये जा रहे अस्तित्व पर पड़ी. विस्थापन की मेरी यह गति उन्हें नागवार गुजरी. वे उनकी राह में खड़ा हो गये जो मुझे पता नहीं कहाँ ले जाने की साज़िश कर रहे थे. उन्होंने मुझे नष्ट होने से बचा लिया. मेरी दुर्गति रूक गई. नेक दिल, क़ानून परस्त, जुल्म का प्रतिकार करने वालों ने मेरे पक्ष में हस्तक्षेप किया. तू–तू मैं–मैं हुई. इनकी हिम्मत ने मुझे उजड़ने से बचा लिया. इन्होंने मुझे विनष्ट करने वालों से लोहा लिया. नहीं माने तो सिदगोडा थाना को फोन कर पुलिस बुला लिया. फिर तो कई लोग आ गये मेरे पक्ष में. अब बारी मुझे छिन्न भिन्न करने वालों के हताश निराश होकर पीछे हटने की थी. ख़ूब तर्क वितर्क किया, झकझूमर किया, धौंस दिखाया पर पुलिस और नेक नीयत वालों के सामने उनकी एक न चली. मुझे बग़ल के भूखंड पर छोड़ उन्हें रफ्फू चक्कर होना पड़ा. मैं कई महीनों तक वहाँ बेतरतीब पड़ा रहा.

मुझे अच्छी तरह याद है कि इस बीच तत्कालीन ज़िला खेल पदाधिकारी भी वहाँ आए. मेरी दुर्दशा और मेरे उपस्करों को अन्यत्र ले जाने वालों के बारे में उपायुक्त को दिनांक 20.12.2021 को बताया, उन्हें इस बारे में पत्र लिखा. उपायुक्त का आदेश मिला तो मुझे उजाड़ने वालों पर मुक़दमा किया. सिदगोडा थाना में प्राथमिकी संख्या 15, दिनांक 24.01.2022 दर्ज किया. ज़िला खेल पदाधिकारी ने प्राथमिकी में लिखा कि बिना सक्षम पदाधिकारी के आदेश के सरकारी मद से निर्मित पार्क को एक स्थान से दूसरे स्थान पर शिफ़्ट किया जाना ग़ैर क़ानूनी तथा स्वेच्छाचारिता प्रतीत होता है. उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री के विधायक प्रतिनिधि श्री पवन अग्रवाल एवं सूर्य मंदिर कमिटी के अन्य लोगों का बयान लिया. जिन्होंने स्वीकार किया कि कोरोना महामारी के मद्देनजर सूर्य धाम स्थित चिल्ड्रेन पार्क का फैलाव करने के उद्देश्य से वे मुझे स्थानान्तरित कर रहे थे, बगल की खाली पड़ी जमीन की ओर ले जा रहे थे.

मेरे प्रांगण में एक दिन अचानक कदमों की आहट सुनायी पड़ी. मेरी तंद्रा टूटी. देखा मेरे आस पास साफ़ सफ़ाई शुरू हो गई है. मुझे पुनर्स्थापित करने की खुसुर–फुसुर चल रही है. मैंने सुना कोई बाल मेला लगने वाला है यहाँ. क्या होता है बाल मेला ? क्यों लग रहा है यहाँ ? क्या होगा इसमें ? मैं कैसे जुड़ूँगा इससे? भाँति भाँति के प्रश्न मेरे जड़ मन में उमड–घुमड़ रहे थे. मैं अचम्भित था. मेरी तंद्रा टूट रही थी. मैंने महसूस किया कि मुझे सजाया संवारा जा रहा है. मेरा रंग रोगन हो रहा है. विस्थापन के समय छिटके मेरे अंगों को यथा स्थान लाया जा रहा है. मैं पुलकित हो रहा था. मुझे मेरे आरम्भिक दिन याद आ रहे थे जब विश्वकर्मा पुत्रों ने मुझे आकार दिया था. उस वेदना की अनुभूति मुझमें सिहरन पैदा कर रही थी. रोमांच से सराबोर हो रहा था मैं. खड़ा खड़ा देख रहा था कई अन्य उपस्कर, कई अन्य संयंत्र मेरे अग़ल बग़ल स्थापित किये जा रहे थे. मुझे पूर्णता प्रदान की जा रही थी, समृद्ध किया जा रहा था. मैं आह्लादित अनुभव कर रहा था. मेरा आस पडोस, मेरा परिवेश आकर्षक दिखने लगा था. मुझे समृद्ध बनाने वाले, मेरे समीप आकर्षण एवं रोचकता का लघु संसार खड़ा करने वालों को मैं मन ही मन सराह रहा था. विस्थापन की पीड़ा भूलने लगा था. मुझे बेरहमी से विस्थापित करने वाले क्रूर चेहरे याद तो आ रहे थे पर ज़ेहन में उनके प्रति दया, क्षमा के भाव उमड़ने लगे थे. तिरस्कार की जगह परिष्कार लेने लगा था. उनकी लोभी, लालची, निहित स्वार्थी करतूतों को भूल जाना तो मेरे लिए असंभव है पर उनके उलट एक नया सृजन संस्कार की अनुभूति उस पीड़ा पर मरहम लगा रही थी, उन घावों को भरने में लगी थी, मैं उस पीड़ा से उबरने लगा था, जिससे मुझे छलनी कर दिया गया था. मैं पुनः एक सार्थक स्वरूप ग्रहण कर रहा था. एक विस्तृत क्रीड़ा संसार में समाहित हो रहा था. मेरी ख़ुशी परवान चढ़ रही थी. मुझे संवारने, मुझे नवजीवन देने के प्रयासों की सराहना करने वालों के उद्गार मुझे प्रफुल्लित कर रहे थे. मैं फूला नहीं समा रहा था. मेरे जड़ जीवन का कण कण रोमांचित हो रहा था. मैं उपकृत महसूस कर रहा था. सोच रहा था संसार विविधताओं से भरा है, सभी एक जैसे नहीं है. राजनीति के रंग भी कितने अलग अलग हैं. उजाड़ने वाला भी, बसाने वाला भी. निहित स्वार्थी भी, परोपकारी भी. तोड़नेवाला भी, जोड़ने वाला भी. आत्म केन्द्रित भी, सर्व समावेशी भी.

इस उहापोह में ही था कि वह दिन आ गया जिसकी प्रतीक्षा थी. कई दिनों से जो सुन रहा था, जिसे समझने की चेष्टा कर रहा था. वह मंजर सामने आ गया. बहुप्रतीक्षित सपना साकार हो गया. 12 नवम्बर 2022 के दिन शुभ वेला में बाल मेला का उद्घाटन हो गया. राज्य सभा के विद्वान उपसभापति श्री हरिवंश के कर कमलों से यह समारोह संपन्न होते ही उत्साहित बच्चे–बच्चियों, युवा–युवतियों के

साथ उनके अभिभावकों का समूह मेरे प्रांगण में उमड़ पड़ा, विभिन्न गतिविधियों में संलिप्त हो गया. ख़ुशी के इस संसार में मैं भी सराबोर हो गया, इनके साथ एकाकार हो गया. तेरा–मेरा, अपना–पराया का भेद मिट गया. आनंद विभोर अद्भुत परिवेश का सृजन हो गया मेरे चारों ओर. मैं, चिल्ड्रन पार्क, पहली बार लग रहे इस बाल मेला का साक्षी बन गया, इसके साथ एकाकार हो गया, सुध–बुध खोकर तीन दिनों तक बाल भावना के साथ प्रवाहित होते रहा, ओत–प्रोत होते रहा, भाव विभोर था मैं. तीन दिन कैसे बीत गये पता नहीं चला. हँसते खेलते 14 नवम्बर आ गया, बाल दिवस का दिन, राष्ट्रीय बाल दिवस का दिन. आज बाल मेला का समापन हो गया. एक ऐतिहासिक आयोजन का स्थल बन मैं, चिल्ड्रन पार्क, सिदगोडा, जमशेदपुर फूला नहीं समा रहा हूँ.

बाल मेला – 2022 का आनन्द उठाने वालों, मेला का आयोजन करने वालों, इसे निहारने–परखने वालों से तीन दिनों तक मैंने जो जाना, सुना उससे बाल मेला की प्रासंगिकता और मेरे होने का इतिहास सामने आ गया. अपनी कथा सुनाने के पहले मैं बाल मेला की प्रासंगिकता का साक्षात्कार आपसे कराना श्रेयस्कर समझता हूँ. भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं जवाहर लाल नेहरू की जन्म तिथि को भारत में राष्ट्रीय बाल दिवस मनाया जाता है. 27 मई 1964 को 75 वर्ष की आयु में हृदयघात से उनकी मृत्यु हो जाने के बाद संसद ने प्रस्ताव स्वीकृत किया कि उनके जन्म दिन 14 नवम्बर को बाल दिवस के रूप में मनाया जाएगा. इसके पूर्व 1954 से हर साल 20 नवम्बर को विश्व बाल दिवस मनाया जाता रहा है. इस दिन संयुक्त राष्ट्र संघ ने बाल अधिकारों का संरक्षण के लिए एक घोषणा पत्र स्वीकृत किया. इसकी स्मृति में दुनिया 30 नवम्बर को विश्व बाल दिवस मनाती है. मेरे प्रांगण में आयोजित बाल दिवस–2022 के दिन झारखंड के प्रथम बाल दिवस के उद्घाटन के अवसर पर आगत अतिथियों ने अपने संबोधन में विश्व बाल दिवस और राष्ट्रीय विश्व दिवस के बारे में जो बताया उसी से मुझे यह जानकारी मिली.

जमशेदपुर का यह प्रथम बाल मेला भी निर्विघ्न नहीं रहा. विघ्न संतोषी इसमें भी खलल डालने से बाज नहीं आए. जिन लोगों ने मुखे उजाड़ा था, चुनाव हार जाने की खुन्नस में मेरा अस्तित्व समाप्त करने की कोशिश किया था, मुझे मेरे स्थान से विस्थापित किया था, उन्हें बाल मेला–2022 का सफल आयोजन पच नहीं रहा था. मेरे प्रांगण के सटे एक तालाब है. यह तालाब बहुत पुराना है, मेरे स्थापित होने के पहले से, सूर्य मंदिर बनने के पहले से भी आसपास के लोग, खासकर बच्चे तालाब में स्नान किया करते थे, तब इसके चारो ओर घना जंगल जैसा परिदृश्य

था. 2002–03 में सरकारी खर्चे से तालाब का सौन्दर्यीकरण हुआ. छठ के समय पर छठ पूजा होने लगी. बाकी समय यह वीरान रहता है. बाल मेला के आयोजकों ने तय किया कि चिल्ड्रेन पार्क से सटे इस तालाब स्थल का उपयोग नन्हे–मुन्ने बच्चों की क्रीड़ा प्रतियोगिता के उपरांत पारितोषिक वितरण कार्यक्रम के लिए किया जाय. इस हेतु आवश्यक ढाँचा वहाँ खड़ा किया जा रहा था. सूर्य मंदिर समिति से जुड़े लोगों ने कतिपय बाहुबलियों को वहाँ बुला लिया. वे वहाँ आयोजन का विरोध करने लगे. वे कह रहे थे कि यहाँ छठ होता है, कोई अन्य आयोजन होने से यह स्थान अपवित्र हो जायेगा, छठ पर्व की आस्था पर चोट पहुँचेगी. उन्होंने वहाँ अनुमंडलाधिकारी को बुला लिया, छठ पर्व की आस्था पर चोट की बात कह कर वितंडा खड़ा कर दिया तो अनुमंडलाधिकारी ने उस स्थान पर कोई भी आयोजन करने से मना कर दिया. बाल मेला के आयोजकों ने उनकी बात मान ली, विघ्नसंतोषियों ने इसे बड़ी उपलब्धि माना. विडियो चैनलों पर गाली–गलौज की भाषा में, धमकी की भाषा में, आतंक और भय पैदा करने वाली उत्तेजक भाषा में विडियो चैनलों के सामने अपनी भढ़ास निकाला. उनकी ऐसी बातें सुनकर मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़ था. छठ पर्व का आयोजन तो एक बहाना था. वास्तव में नन्हें–मुन्नों का नैसर्गिक कार्यक्रम वहाँ होना उन्हें पच नहीं रहा था. वहाँ खड़ा जन समुदाय मन ही मन उन्हें कोश रहा था, उनकी निंदा कर रहा था, परस्पर बातचीत कर रहा था कि अब तक सूर्य मंदिर के जितने आयोजन यहाँ होते रहे हैं उन सभी आयोजनों में उनके समर्थक जूता–चप्पल पहन कर इस स्थल पर चहलकदमी करते हैं और क्या–क्या नहीं करते हैं. पूर्व मुख्यमंत्री के भाई ने तो तालाब के किनारे एक कियोस्क बनवा लिया, जहाँ देर शाम तक उनकी महफिल जमती रहती थी, उनका रौब–दाब देखते ही बनता था. परन्तु यही लोग आज बाल मेला का नन्हें–मुन्नों से जुड़ा आयोजन होने का हिंसक विरोध कर रहे हैं.

विघ्नसंतोषियों द्वारा उत्पन्न अनावश्यक तनाव का माहौल शिथिल होते–होते देर शाम हो गयी. कल दोपहर बाद 3 बजे बाल मेला का उद्घाटन होना था. मेला के आयोजक नन्हें–मुन्नों के प्रतियोगिता के लिए वैकल्पिक स्थान की तलाश में लग गये. शाम के करीब 8 बज गये थे, तभी एक निजी स्कूल के प्रबन्धक दौड़े भागे मेला आयोजन स्थल पर पहुँचे. उनके चेहरे पर हवाईयाँ उड़ रही थी. तेज गति से आने के कारण वे हॉफ रहे थे. उनकी साँसे सामान्य हुईं तो उन्होंने जो सूचना दी उससे वहाँ उपस्थित सभी विचलित हो गये. उन्होंने बताया कि जिला के उपायुक्त की ओर से सभी सरकारी एवं निजी विद्यालयों के प्रबंधन को लिखित आदेश आया है कि

उनके विद्यार्थी स्कूल अवधि में बाल मेला में नहीं जायेंगे. विद्यालय अवधि समाप्त होने के बाद वे अपने अभिभावकों के साथ ही मेला देखने जा सकते हैं. न केवल उपायुक्त ने ऐसा आदेश जारी किया है, बल्कि शिक्षा विभाग के बी.आर.पी./ सी.आर.पी. विद्यालयों के प्राध्यापकों को फोन कर हिदायत दे रहें है कि उनके विद्यार्थियों को बाल मेला में भाग नहीं लेना वे सुनिश्चित करें. उसके बाद तो बाल मेला के मुख्य संरक्षक विधायक श्री सरयू राय के मोबाईल फोन पर निजी एवं सरकारी विद्यालयों के प्रबंधकों के फोन का तांता लग गया । जमशेदपुर के शिक्षा जगत में यह बात जंगल में आग की तरह फैल गयी. सरकारी निजी विद्यालयों के प्राध्यापक एवं अध्यापक रात 10 बजे तक बाल मेला स्थल पर आते रहे. सभी के मन में असमंजस था कि उनके विद्यालय किस प्रकार जमशेदपुर के पहले बाल मेला में शिरकत कर सकेंगे.

बाल मेला के आयोजक ऐसी स्थिति में भी निश्चिंत भाव में थे, अविचलित थे. उन्होंने तय किया और विद्यालयों के प्राध्यापकों को बता दिया कि वे जिला प्रशासन का आदेश माने. विद्यार्थियों के मन में बाल मेरा का आकर्षण होगा, बाल मेला से उनका भावनात्मक जुड़ाव होगा तो विद्यार्थी और अभिभावक मेला में अवश्य आएंगे. ये सारी बाते मेरे प्रांगण में हो रही थी, मेरा मन भी चिंता से भर गया कि रंग में भंग डालने वालों का मंसूबा कहीं पूरा न हो जाय और बाल मेला का पहला आयोजन असफल न हो जाय. ''प्रथम ग्रासे ही मक्षिका पातः'' की आशंका मेरे मन में व्याप्त हो गयी. पर यह क्या ! अगले दिन का नजारा ही कुछ अलग हो गया. दोपहर होते–होते स्कूली बच्चे झुंड के झंड मेला में पहुँचने लगे. कतिपय निजी विद्यालयों के प्रबंधकों ने तो अपने विद्यार्थियों के लिये स्कूल बस की सुविधा सुलभ करा दिया. गोविन्दपुर का सेंट जेवियर्स विद्यालय इसमें अग्रणी था. फिर तो तीन दिनों तक बच्चों ने मेला में खुल कर मौज–मस्ती किया, कार्यक्रमों का आनंद लिया, खेल प्रति स्पर्धाओं में भाग लिया. निजी स्कूलों के साथ ही सरकारी स्कूलों के प्रधानाध्यापक–प्राध्यापक भी बाल मेला के साथ एकाकार हो गये, अदभुत वातावरण बन गया. कहा गया है – हरि इच्छा बलवती. विघ्न संतोषी हतोत्साहित हो गये, बगले झांकने लगे, अपनी खिड़कियों से मेला को निहारते रहे.

कैसे स्थापित हुआ मैं, कब स्थापित हुआ, स्थापना के बाद किस भाँति संचालित हुआ. कैसी कैसी निगाहें पड़ीं मुझ पर. किसने क्या समझा, कैसा सलूक किया, कैसी अपेक्षाएँ रखीं, क्या चाहा. क्या पाया. इस अवधि में मैं कब, कैसे जुड़ा, टूटा, बिखरा, पुनः आकार लिया. इस बारे में कतिपय दस्तावेज़ी जानकारियाँ भी

मिलीं जिन्हें आपके साथ बाँटने का, साझा करने का लोभ मैं संवरण नहीं कर पा रहा हूँ. मैं कैसे इस पड़ाव तक पहुँचा हूँ, यह गाथा कम रोचक नहीं है. वस्तुतः यह मेरी आत्म कथा का आरम्भ है. मेरी यात्रा वृतांत की शुरुआत है. आप सब मेरे इस सफ़रनामा के सहचर हैं. मैं जड़ हूँ, आप गतिमान हैं. मैं स्थावर हूँ आप भ्रमणशील हैं. फिर भी हम अभिन्न हैं, एक हैं. आप भी साक्षी हैं, सहचर हैं मेरे इस यात्रा वृतांत के.

मेरी स्थापना कब हुई? किसकी पहल पर हुई? किसने आदेश दिया इसके लिए? इसकी जानकारी मुझे बहुत दिनों तक नहीं थी. आज भी नहीं है, कुछ सुनी सुनाई बातों के सिवाय. एक दिन मेरे प्रांगण मे लगी सीमेंट की नई बेंच पर बैठकर दो अनुभव समृद्ध सज्जन सहज वार्तालाप कर रहे थे. मेरे पुनरुद्धार के प्रयत्नों की सराहना कर रहे थे. एक ने मेरे अस्तित्व के आरम्भिक दिनों की चर्चा छेड़ दी. मैं सुनने लगा जो वे बता रहे थे उसके अनुसार मेरी स्थापना 2009 के पहले हो गई थी. 10 मार्च 2010 को मेरे सौंदर्यीकरण के लिए 17,87,700 रुपये का एक प्राक्कलन ज़िला परिषद, पूर्वी सिंहभूम ने पर्यटन विभाग की पहल पर तैयार किया. यह प्राक्कलन ही इसके कुछ वर्ष पूर्व से मेरे होने का एक प्रमाण है. पर जैसे हर प्राक्कलन की एक पृष्ठभूमि होती है वैसे ही इसकी भी होगी. किसी ने पहल किया होगा, कहीं से योजना स्वीकृत हुई होगी. तब इसके कार्यान्वयन के लिए एक प्राक्कलन की ज़रूरत महसूस हुई होगी. तब जाकर मेरे क्षरित हुए स्वरूप को पुनः आकार देने अथवा विस्तार देने के लिए यह प्राक्कलन तैयार हुआ होगा. चुकि इस प्राक्कलन के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए धन पर्यटन विभाग दे रहा था, इसलिये मैं सहज अनुमान लगा सकता हूँ कि मेरा जन्म पर्यटन विभाग की कोंख से ही हुआ होगा. खैर !

पूर्वी सिंहभूम ज़िला परिषद द्वारा तैयार किये गये इस प्राक्कलन के आधार पर मैं एक नए स्वरूप में पुनः उठ खड़ा हुआ. पर्यटन विभाग, झारखंड सरकार ने 30 अप्रैल 2010 को प्राक्कलन की अनुमानित राशि पूर्वी सिंहभूम ज़िला के उपायुक्त को भेज दिया. इस राशि से मेरा सौंदर्यीकरण हुआ. मेरे प्रांगण में कई अतिरिक्त उपस्कर लगाए गए. एक छोटा सा वाटर पार्क भी बना. बाद में एक दिन उसे कूड़ा–कबाड़ से भर भी दिया गया.

इसके बाद 98,73,975 (अन्ठानवे लाख तिहत्तर हजार नौ सौ पचहत्तर) रुपये के खर्च पर मेरे पड़ोसी सोन मंडप का और सूर्य मंदिर के पास बने शंख मैदान पार्क के सौंदर्यीकरण का काम शुरू हुआ. यह पार्क कब बना, या यूँ ही मंदिर के

समीप ख़ाली पड़ी ज़मीन को पार्क का सुन्दर स्वरूप देने की योजना पर काम शुरू हुआ. कब शुरु हुआ यह तो मैं नहीं बता सकता. पर मैंने सुना है कि सूर्य मंदिर बनने के काफ़ी पहले वहाँ हनुमान जी का एक छोटा सा मंदिर स्थानीय लोगों ने बनाया. ज़ैप–6 के कतिपय उत्साही जवानों ने इसमें योगदान किया. पुलिस एसोसिएशन के सक्रिय जवानों की इसमें अग्रणी भूमिका रही. तब यह स्थान खुला खुला था. मंदिर के प्रांगण में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होने लगे. ऐसे ही एक कार्यक्रम में मंदिर प्रबंधकों ने इस क्षेत्र के विधायक जी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया. उनसे मंदिर का विकास करने का अनुनय विनय किया. विधायक जी की रूची जगी. कालक्रम में विधायक जी के द्वारा अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर मंदिर परिसर को हथिया लेने और पहले के मंदिर प्रबंधकों को धकिया देने के बारे में जितने मुँह उतनी बातें सुनने में आती हैं. मंदिर परिसर के पूर्व प्रबंधकों, श्रद्धालुओं, भक्तजनों की भूमिका इतिहास के गर्त में समा गई है. सूर्य मंदिर बनने में किसी भूपत भाई के योगदान को भी भुला दिया गया है. वह दिन भी बहुत कम लोगों को याद है जब सूर्य मंदिर के समारोह में तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री बाबूलाल मरांडी, वित्त मंत्री श्री मृगेन्द्र प्रताप सिंह, कल्याण मंत्री श्री अर्जुन मुंडा आदि शामिल हुए, सहयोग दिया. यह बात 2002–03 की है. इसका शिलापट्ट भी अब वहाँ मौजूद नहीं है.

इस समय तक यहाँ तालाब का निर्माण हो चुका था. इसके बाद मंदिर के सामने के मैदान में पार्क बना, सोन मंडप, यात्री निवास आदि तथा स्वयं चिल्ड्रन पार्क के रूप में मेरा निर्माण हुआ, फिर हमारा आधुनिकीकरण हुआ. इसमें बड़े पैमाने पर सरकारी धन लगा. बताने वाले बताते हैं कि विधायक निधि, सांसद निधि, पर्यटन निर्माण की निधि सहित झारखंड सरकार की क़रीब पाँच दर्जन योजनाओं के पैसे इसमें लगे हैं. पर किसी का शिलापट्ट यहाँ नहीं दिखता. यहाँ तक कि सूर्य मंदिर के निर्माण में भी सरकारी योजनाओं का धन खर्च किया गया. योजना सरकार के किसी भी विभाग की हो क्रियान्वयन का सारा काम पूर्वी सिंहभूम ज़िला परिषद ने किया. ज़िला परिषद के कार्यालय में रखे काग़ज़ात आज नहीं तो कल सामने आएँगे. पता चलेगा कि सारी संरचनाएँ तो सरकारी पैसों से बन गई, फिर श्रद्धालुओं एवं व्यवसायियों से लिये गये आर्थिक योगदान का उपयोग यहाँ के निर्माण में किस भाँति हुआ है.

ये बातें अब पुरानी हो गई हैं. जब थीं तब थीं. विगत 20 वर्षों में बहुत कुछ बदल गया है. मंदिर निर्माण का इतिहास भी बदल गया है. इसका पुनर्लेखन समय की माँग है. कोई न कोई तो इसके लिये सामने आयेगा, अब तो मदिर परिसर

राजनीति का अखाड़ा बनते जा रहा है. यहाँ आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के पीछे उद्देश्य धार्मिकता का प्रचार प्रसार करना कम और राजनीतिक हवा बनाना अधिक हो गया है. इस मामले में सूर्य मंदिर समिति की नई इंट्री हुई. सूर्य मंदिर समिति का आनन–फानन में एन.जी.ओ. रूप में रजिस्ट्रेशन कराया गया. सूर्य मंदिर समिति का रजिस्ट्रेशन कराने का पीछे इसके आस–पास की सरकारी जमीन और सरकारी खर्च से इस जमीन पर बनायी गई परिसम्पत्तियों पर संस्थागत कब्जा करने की मंशा काम कर रही थी. सोसाईटी रजिस्ट्रेशन – 1860 के अधीन सूर्य मंदिर समिति के नाम से एक स्वयंसेवी संगठन (एन.जी.ओ) का रजिस्ट्रेशन 2020–21 में हुआ जिसका रजिस्ट्रेशन 224/2020–21 है. सूर्य मंदिर समिति के कार्यों की सूचना पूर्वी सिंहभूम के उपायुक्त तक पहुँची, उन्होंने पत्रांक 2162, दिनांक 29–12–2022, द्वारा निबंधन महानिरीक्षक, झारखंड सरकार को पत्र लिखकर सूर्य मंदिर समिति का रजिस्ट्रेशन रद्द करने की अनुशंसा किया. उपायुक्त के अनुशंसा के आलोक में निबंधन महानिरीक्षक के कार्यालय में पत्रांक – 13/नि. विविध संस्था–01/2023–45.नि., दिनांक 24–01–2023 द्वारा सूर्य मंदिर के कर्ता–धर्ता बने श्री गुंजन यादव एवं अन्य से स्पष्टीकरण पूछा कि क्यों नहीं आपकी संस्था सूर्य मंदिर समिति का निबंधन रद्द कर दिया जाय. सूर्य मंदिर समिति ने निबंधन महानिरीक्षक के पास निबंधन के लिए जो आवेदन भेजा है उसमें समिति का कार्यालय ''सूर्य मंदिर, बारा सिवेज के समीप, एग्रिको, थाना–सिदगोड़ा, पोस्ट–एग्रिको, जमशेदपुर, पूर्वी सिंहभूम, झारखंड–831009 बताया गया है और इसका कार्यक्षेत्र पूरा झारखंड बताया गया है. इसके अनुसार पंजीकृत सूर्य मंदिर समिति का सिदगोड़ा के प्रासंगिक सूर्य मंदिर से और इसके संचालन से क्या संबंध है. इससे स्पष्ट नहीं होता. वस्तुतः यह समिति खानगी है. यह समिति जनता की या श्रद्धालुओं की नहीं है, बल्कि हाँ में हाँ मिलाने वाले चाटुकारों की है.

कहा गया है कि जहां स्वार्थ हावी हो जाता है वहाँ समझौते शुरू हो जाते हैं. पर्व त्योहार के बहाने यहाँ आयोजित कार्यक्रमों में इसकी स्पष्ट झलक मिलती है. होली–दिवाली हो, रामनवमी–कृष्णाष्टमी हो या पवित्र छठ व्रत का आयोजन हो, इन सभी अवसरों पर यहाँ आयोजित होने वाले कार्यक्रमों का गवाह मैं भी बनता हूँ. ऐसे अवसरों पर मचने वाली चिल्ल–पों से मेरे वातावरण पर जैसा कुत्सित प्रभाव पड़ता है उसे सटीक भाषा में सहजता से अभिव्यक्त करना मेरे जड़ मन के लिए संभव नही है. पर जैसा कहा जाता है कि कण कण में भगवान, हर कंकड़ एक शंकर, करत करत अभ्यास से जड़ मति होत सुजान आदि आदि, तो मेरे जड़ मन की संवेदना

भी स्वार्थ प्रेरित, समझौता परस्त ऐसे आयोजनों से दग्ध होते रहती है. सूर्य मंदिर की आड़ लेकर सरकारी ज़मीन पर और सरकारी खर्चे पर निर्मित संरचनाओं पर क़ब्ज़ा जमाना और इससे होने वाली आमदनी से अपना और अपनों की झोली भरने का ऐसा उदाहरण बहुत कम मिलता है. मैं भी इसका शिकार हूँ, भुक्तभोगी हूँ.

यहाँ के आयोजनों में अक्सर शामिल होने वाले चेहरों को भी मैं धीरे धीरे जान, समझ गया हूँ. ऐसा नहीं कि आयोजकों के निहित स्वार्थ, इनकी अकड़ और दंभ का बैलून जितना बड़ा है उसका एहसास कार्यक्रमों को सुशोभित करने के लिए मुख्य एवं विशिष्ट अतिथियों के नाते शामिल होने वाली छोटी–बड़ी शख़्सियतों को नहीं है. इन कार्यक्रमों में शामिल होने पर विवश होने वाले विशिष्ट जनों के तो अलग अलग कारण हैं, उनकी अलग अलग उपयोगिता है जो इनमें सहभागिता प्रदर्शित कर उन्हें प्रफुल्लित, मुदित और संतुष्ट रखने का बहाना बनती है. परंतु छले तो वे निश्छल जाते हैं जो इसे गंभीर धार्मिक कार्य समझकर इसमें शामिल होते हैं और सस्ते मनोरंजन का एहसास लेकर वापस लौटते हैं. ऐसे सामान्य जन के चेहरों की भाव भंगिमा और इनके मन–मस्तिष्क में उठने वाली भावनात्मक दुविधा को समझ पाना और उसे सटीक शब्दों में अभिव्यक्त करना मेरे सदृश अजैविक के लिये संभव नहीं है.

इस आलोक में पवित्र छठ पर्व पर आयोजित होने वाले रसीले, भड़कीले कार्यक्रम तो मेरे जड़ अंतर्मन को भी झकझोर कर रख देते हैं. सरकारी खर्चे पर यहाँ बने दो बड़े तालाब छठ व्रतियों के आकर्षण के स्वाभाविक केन्द्र हैं. जिस समय इन तालाबों को सरकारी खर्चे पर बनाया गया और कुछ ही समय बाद सौंदर्यीकरण की सरकारी योजना के अंतर्गत इन्हें परिष्कृत किया गया तब इनके निर्माण का उद्देश्य छठ पूजा का आयोजन नहीं था. बल्कि पार्क के नाम पर मंदिर के बग़ल की ख़ाली ज़मीन पर कब्जा करना और लोगों को आकर्षित करने के लिये शंख मैदान उद्यान के समीप मनोरंजन का एक अतिरिक्त माध्यम खड़ा करना था. तभी तो वहाँ बने तालाबों के भीतर चलने के लिये सरकारी पैसा खर्च कर दो बोट (नाव) ख़रीदी गई, इसके भीतर फव्वारानुमा ढाँचा खड़ा किया गया और एक तालाब के किनारे पर कियोस्क बनाकर आगंतुकों को लुभाने वाले खाद्य एवं पेय पदार्थों के व्यवसाय का केन्द्र बनाया गया जहां देर रात तक एक विशिष्ट परिवार के अनुज के सौजन्य से बैठकबाजी की महफ़िल जमी रहती थी. इस स्थान पर एक खास परिवार का व्यवसाय चलता था. छोटे भाई का कब्जा था इस पर. बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ छोटे मियाँ सुभान अल्लाह की कहावत सटीक बैठती और साकार होती थी.

वहाँ तक पहुँचने के लिए 5 रूपये का टिकट कटाकर आसपास विचरण करने वाले अथवा अतिरिक्त 5 रुपया देकर अपने बच्चे–बच्चियों को मनोरंजन एवं खेल–कूद के लिए मेरे प्रांगण तक पहुँचाने वाले अनेक अभिभावक समय काटने के लिए इस व्यवसायिक स्थल के इर्द गिर्द घूमते फिरते रहते थे. इस दौरान होने वाले अनुभवों की रोचक मीमांसा उनसे सुनने का मौक़ा मुझे अक्सर मिलते रहता था. वे परस्पर चर्चा करते थे कि सरकारी खर्च पर खड़ा की गई इन संरचनाओं पर व्यक्तिगत क़ब्ज़ा सुदृढ़ करने और इन्हें हमेशा हमेशा के लिए अपने क़ब्ज़ा में रखने की भाँति भाँति की योजनाओं की रूपरेखा कियोस्क के पास मजमा लगाने वालों के बड़बोलापन से रोज–ब–रोज सामने आते रहती थीं. इस स्थान पर सैर सपाटा के लिए आने वालों को भी लगने लगा था कि इस परिसर की यही नियति है. सूर्य मंदिर के नाम पर उन्माद की हद तक जाने वाली धार्मिक भावनाएँ जगाकर सरकारी ज़मीन पर सरकारी खर्चे से बनी संरचनाओं का व्यक्तिगत व्यवसायिक साम्राज्य के रूप में संचालित करने की मंशा साफ़ झलकती थी. मालिकाना आंदोलन की आड़ में इन परिसंपत्तियों पर प्रतिकुल कब्जा जमाने की इस साज़िश को वहाँ आने–जाने, उठने–बैठने वालों ने सच के रूप में स्वीकार कर लिया था. ठीक वैसे ही जैसे मुग़लों के आक्रमण से देशी राजाओं के पराजित होने पर देश की जनता ने उनकी अधीनता स्वीकार कर ली थी. उनकी परास्त मानसिकता ने मान लिया था कि इनके साथ एडजस्ट करके रहना ही भारतवासियों की नियति है. पर समय के शिलालेख पर अंकित हो गया कि जैसे वह नहीं रहा वैसे ही यह भी नहीं रहा.

जब आक्रांता आश्वस्त हो जाता है कि सामने वाले के रीढ़ की हड्डी में दम नहीं बचा है तो वह मनमानी पर उतर जाता है. सामने वाले उसे तुच्छ लगने लगते हैं. वह दंभी हो जाता है. अहंकार उसके सिर चढ़ बोलने लगता है. शासन प्रशासन को वह पैर की जूती समझने लगता है. बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ, छोटे मियाँ सुभान अल्लाह की कहावत सिर चढ़कर बोलने लगती हैं. छोटे मियाओं की अलग अलग श्रेणियाँ खड़ा हो जाती हैं. यही टुच्चे इनके पतन और पराभव की राह प्रशस्त करते है. ऐसा ही माहौल यहाँ भी बना. उसका असर भी हुआ. 20–25 साल से कुंडली मारकर बैठे, दम्भ और अभिमान से भरे, उदंडों और अत्याचारियों से घिरे, सत्ता शीर्ष की शक्ति के उन्माद से जकड़ी व्यवस्था को मौक़ा मिलते ही उसी जनता ने एक झटके में असली मुक़ाम पर पहुँचा दिया. जिसने अर्श तक पहुँचाया था उसी ने फर्श पर डाल दिया. वह कथन चरितार्थ हो गया कि ''रहिमन आह गरीब की कबहुँ न निष्फल जाय, मरे चाम की साँस से लौह भस्म हो जाय.''

पूर्वी परिवर्तन की इस गाथा को आज भी चटखारे लेकर सुनाने वालों की कमी नहीं है. लोग आते हैं, बतियाते हैं और मैं सुनते रहता हूँ. कई तो इस परिवर्तन अभियान में अपनी सक्रिय भूमिका का सजीव बखान इस कदर करते हैं कि मैं भी अचम्भित रह जाता हूँ. आबाल– वृद्ध इस मामले में एक मत दिखते हैं कि जैसे लंबे समय से जमा पानी गंदा हो जाता है, उसमें कीड़े पैदा होने लगते हैं, सड़ांध बर्दाश्त से बाहर हो जाती है, वैसी ही स्थिति लंबे समय से इस क्षेत्र का जन प्रतिधिनित्व एक हाथ में रहने से हो गई थी. निहित स्वार्थियों और उदंड मानसिकता वालों की एक ऐसी जमात खड़ा हो गई थी जिसने जनता में भय और आतंक का माहौल क़ायम कर दिया था. ठेले–खोमचे वालों को भी इन्होंने नहीं बख्शा. सत्ता का नशा इस कदर इनके सिर चढ़ बोलने लगा था कि भाई लोग थाना की हाजत से खींचकर पिटाई कर देते थे. पिटाई खाने वाले सरदार भी थे, असरदार भी थे. आम भी थे, खास भी थे. पुलिस इनके सामने बेबस थी. आम जन में भय और आतंक का माहौल बन गया था, पर एक समय आया कि लोगों ने इनके संरक्षक सत्ता शीर्ष को धूल चटा दिया. अभिमान को औंधे मुँह गिरा दिया. मिथ्या की हार हो गई, सत्य जीत गया. जनता की एकजुटता के सामने सत्ता का दम्भ ठहर नहीं पाया. इस तरह के बतकुचन एवं विश्लेषणों की गूंज प्रायः हर रोज मेरे प्रांगण में सुनाई पड़ती है. लोगों की संतुष्टि से मैं भी यह सोचकर संतुष्ट हो जाता हूँ. जैसा कि गोस्वामी तुलसी दास जी ने राम चरित मानस में वर्णन किया है – सुनहुं भरत भावी प्रबल विलखि कहेउ मुनि नाथ. हानि, लाभ, जीवन, मरण, यश अपयश विधि हाथ.

इस क्रम में पवित्र छठ पर्व पर आयोजित हुए कतिपय उन कार्यक्रमों की चर्चा आपसे न करूँ, जिनमें आस्था की आड़ में अश्लीलता का भौंडा प्रदर्शन हुआ, तो मेरा जड़ मन मुझे कोसता रहेगा. कार्यक्रमों की शृंखला तो लंबी है पर मैं उनमें से दो एक का उल्लेख कर अपने मन की टीस आप तक पहुँचाने की कोशिश कर रहा हूँ. मेरी बातों से सहमत होना या नहीं होना आपके विवेक पर निर्भर है परंतु मैंने जैसा देखा वैसा ही आप तक पहुँचा देना अपना कर्तव्य समझता हूँ ताकि सनद रहे.

एक दिन सूर्य मंदिर परिसर में एक बड़ी बैठक हुई. शहर के मानिंद लोग इसमें शामिल हुए, धनवान भी, बलवान भी, पालकी ढोनेवाले भी और साक्षी के तौर पर प्रेस मीडिया के मित्र भी. यह अवसर विजया मिलन के बहाने एकत्रीकरण का था. शिष्टाचार और औपचारिकता के निर्वहन के बाद तत्कालीन मुख्यमंत्री और इस क्षेत्र के तत्कालीन विधायक ने घोषणा की कि आगामी 6 नवम्बर 2016 को छठ व्रत के संध्याकालीन अर्घ्य के बाद इस परिसर में फ़िल्म जगत की नामी पार्श्व गायिका

श्रीमती सुनिधि चौहान अपने गायन से श्रद्धालुओं का मनोरंजन करेंगी. माननीय मुख्यमंत्री जी का आह्वान हुआ तो वहाँ उपस्थित जमशेदपुर के व्यवसायिक, औद्योगिक क्षेत्र के समर्थ किरदारों ने अपनी थैली खोल दी. देखते देखते क़रीब चार लाख रूपये से अधिक की नगदी एकत्र हो गई. कई लाख के वायदे भी हो गए.

पड़ोसी होने के कारण इस उद्घोषणा की आवाज़ मुझ तक भी पहुँची. मुझे घोर आश्चर्य हुआ. मैंने मन ही मन सोचा कि अवसर तो आस्था के पवित्र पर्व छठ का है. मेरे ज़ेहन में आस्था प्रकट करने वाले छठ के अनेक मनमोहक, उत्प्रेरक, सुरीले गीत कौंधने लगे जिन्हें व्रती एवं श्रद्धालु काँवर और डाला लेकर छठ घाट तक आते और जाते समय भाव विभोर होकर गाते रहते हैं. ये गीत छठ व्रत की पहचान बन चुके हैं, आस्था, भक्ति, समर्पण के प्रतीक बन चुके हैं. इससे अधिक क्या चाहिए छठ व्रतियों एवं श्रद्धालुओं को इस अवसर पर. फिर भी किसी को लगता है कि व्रतियों द्वारा डूबते सूर्य को संध्याकालीन अर्घ्य देकर विश्राम के लिए प्रस्थान करने के उपरांत वहाँ एकत्र होने वाले आम और खास लोगों के मनोरंजन के लिए गीत–संगीत की महफ़िल सजाना ज़रूरी ही है तो वक़्त की गंभीरता के हिसाब से धार्मिक–सांस्कृतिक गीत गाने वाले किसी सौम्य गायक–गायिका की उपस्थिति सुनिश्चित कराना ज़्यादा श्रेयस्कर होता. श्रीमती सुनिधि चौहान की ख्याति तो चटक रंगों वाले भड़काऊ पहनावा धारण कर स्टेज पर लटके झटके वाले फ़िल्मी गीतें प्रस्तुत करने की है. मेरे मन में प्रश्न कौंध रहा था कि पवित्र छठ पर्व के पावन अवसर पर ऐसे फिल्मी गीत संगीत का क्या औचित्य हो सकता है.

ऐसा केवल मैं ही नहीं सोच रहा था बल्कि मेरे प्रांगण के नियमित आगंतुक भी ऐसा ही सोच रहे थे, आपसे में तर्क वितर्क कर रहे थे. वार्तालाप का पटाक्षेप करने की नीयत से एक ने कहा कि इसके पहले साल भी तो छठ पर्व के अवसर पर नेहा कक्कड़ आयी थीं. लटके झटके वाले गीतों की प्रस्तुति दी थी. स्वर से भी और इशारों से उनकी उत्तेजक अभिव्यक्ति पर युवक सीटियाँ बजाने लगे थे. कार्यक्रम में हड़बोंग मच गया था. उत्साहित नौजवानों में स्टेज तक पहुँचने की होड़ लग गई थी. कुर्सियाँ चलने लगीं थीं. कार्यक्रम में हंगामा मच गया था. इतना के बाद भी लगता है आयोजकों की सोच में सुधार नहीं हुआ. तभी तो इस बार सुनिधि चौहान को बुलाया जा रहा है. कई लोग इसकी व्याख्या धार्मिक कार्यक्रमों के व्यवसायिक पहलू के रूप में भी कर रहे थे. जितने मुँह उतनी बातें हो रही थीं.

सुनिधि चौहान आईं, भड़काऊ लिवास पहनकर स्टेज पर चढ़ीं. चकाचौंध के माहौल में फ़िल्मी गीत गाईं और अगले दिन 7 नवम्बर को भाया राँची मुम्बई चली

गईं. पर अपने पीछे झारखंड की राजनीति में लोभ–लाभ का, भ्रष्ट आचरण का एक बवाल छोड़ गईं. जैसा लोगों का कहना है कि सुनिधि चौहान के सूर्य मंदिर समिति के कार्यक्रम में सरकारी धन का अनुचित इस्तेमाल हुआ. सुनिधि ने जमशेदपुर में कार्यक्रम किया 6 नवम्बर 2016 की रात में. 7 नवम्बर 2016 को वे मुम्बई चली गईं. राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री और इस कार्यक्रम को कराने वाली आयोजन समिति के संरक्षक भी कार्यक्रम के अगले दिन 7 नवम्बर 2016 को सरकार सम्हालने राँची चले गए. वहाँ जाकर एक दिन बाद 9 नवंबर 2016 को उन्होंने अपने सरकारी कार्यालय कक्ष में उन अधिकारियों की एक समीक्षा बैठक बुलाया जिनपर झारखंड सरकार के स्थापना दिवस के अवसर पर 15 नवम्बर 2016 के दिन भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने की ज़िम्मेदारी दी गई थी.

बैठक में अधिकारियों ने बताया कि किस तरह सरकार के कला एवं संस्कृति विभाग और सूचना प्रसारण विभाग के सांस्कृतिक प्रभाग ने राज्य के कलाकारों एवं संस्कृति कर्मियों के सहयोग से राज्य स्थापना दिवस पर स्वस्थ मनोरंजन के कार्यक्रमों की रचना की है और गीत संगीत में पारंगत शास्त्रीय और सुगम संगीत के मशहूर कलाकारों को बुलाया है. इस बैठक में मुख्य मंत्री के वरीय आप्त सचिव अंजन सरकार भी शामिल थे. यद्यपि ऐसी बैठक में विचार व्यक्त करने के वे अधिकारी नहीं थे, फिर भी उन्होंने हस्तक्षेप किया और प्रस्ताव रखा कि आगामी 15 नवम्बर को राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में श्रीमती सुनिधि चौहान को बुलाया जाय. आयोजन के लिए मात्र 5 दिन का समय रह जाने के कारण अधिकारियों में असमंजस था. परंतु बैठक की अध्यक्षता कर रहे माननीय मुख्यमंत्री की उपस्थिति में और उनके निर्देश पर यह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया. मुख्यमंत्री के आप्त सचिव ने कहा कि मुंबई के आर्चर इंटरटेनमेंट के माध्यम से सुनिधि चौहान को बुलाने पर क़रीब 44 लाख रूपये खर्च होंगे. आश्चर्य की बात है कि बैठक की अध्यक्षता कर रहे मुख्यमंत्री एवं बैठक में सुनिधि चौहान को बुलाने का प्रस्ताव रखने वाले उनके वरीय आप्त सचिव ने इसका खुलासा नहीं किया कि दो दिन पहले जमशेदपुर में छठ व्रत पर गीत गाने के लिए श्रीमती सुनिधि चौहान ने कितना पैसा लिया था? सही है या नहीं पर खुलेआम चर्चा है कि तत्कालीन राज्यसभा सदस्य परिमल नथवानी ने अंबानी समूह के किसी संस्थान के अकाउंट से इस कार्यक्रम के लिए 20 लाख रूपये का भुगतान सीधे किया है. पर बाक़ी राशि का भुगतान कैसे हुआ? क्या इसे ही एडजस्ट करने के लिए श्रीमती सुनिधि चौहान को राज्य स्थापना दिवस कार्यक्रम मे बुलाने के लिए अधिकारियों को बाध्य किया

गया? ताकि सरकारी ख़ज़ाना से इनके जमशेदपुर प्रोग्राम का भुगतान किया जा सके.

यह मामला विधानसभा में उठा. सरकार ने इसकी जाँच का जिम्मा एसीबी (भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो) को दे दिया. एसीबी की लेट–लतीफ़ी के खिलाफ झारखंड उच्च न्यायालय में सामाजिक कार्यकर्ता श्री पंकज यादव ने एक जनहित याचिका दायर किया है जिसपर सुनवाई चल रही है. आज ही कुछ लोग चर्चा कर रहे थे कि जमशेदपुर पूर्वी के विधायक सरयू राय ने इस घोटाला पर एक पुस्तक लिखा है. **''पुस्तक का नाम है – तिजोरी की चोरी''**. इस पुस्तक में सुनिधि चौहान के इस कार्यक्रम में सरकारी धन से निजी कार्यक्रम का भुगतान करने में की गई हेराफेरी के बारे में विस्तार से चर्चा है. कोई इस पुस्तक को पढ़े तो पता चल जाएगा कि सुनिधि चौहान को भुगतान करने के नाम पर और राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर स्कूली विद्यार्थियों के बीच टॉफ़ी, टी–शर्ट बाँटने के नाम पर कितना बड़ा घोटाला हुआ है. जमशेदपुर के ही कतिपय किरदार घोटाला के केन्द्र बिन्दु हैं. तत्कालीन मुख्यमंत्री के विधायक प्रतिनिधि का नाम भी एसीबी जाँच में सामने आया है.

सूर्य मंदिर के समीपवर्ती पार्क को भाई लोगो ने शंख मैदान का नाम दे दिया है. बहुतों को पता नहीं पर मैं जानता हूँ कि इस मैदान के बीच स्थित पत्थर की एक चट्टान को जेसीबी और तारापोर कम्पनी की भारी मशीन भी नहीं निकाल सकी तो भवन सामग्रियों से ढक कर और लीप पोत कर इसे शंख का आकार दे दिया गया. ज़मीन पर पट पड़े शंख की इस आकृति पर पार्क में घूमने आने वाले चढ़ जाते हैं, महिला–पुरुष इस पर बैठ जाते हैं, बच्चे–बच्चियाँ इस पर खड़ा हो जाते हैं, उछलते कूदते है. शंख की गरिमा का ध्यान नहीं रहता इन्हें. मैदान की सतह पर पट पड़े शंख की आकृति बनाने की सोचने वाले की बुद्धिमत्ता पर तरस आती है. इस मैदान और मेरे बीच के स्थान पर दो तालाब बने हैं. शंख मैदान पार्क की तरह ये तालाब भी सरकारी पैसों से बने हैं. 2002–03 में इसे भी जिला परिषद ने बनाया था. जैसा कि मैंने पहले भी बताया है कि मनोरंजन के लिए इसमें फ़व्वारे आदि भी बनाए गये है. इनमें चलने के लिए बोट भी ख़रीदी गई. जहां तक मुंझे याद है काफ़ी दिनों से ये फ़व्वारे ख़राब पड़े हैं. इनमें चलने के लिए करीब दो लाख रुपये में ख़रीदे गये दोनों बोट वहाँ डैमेज पड़े हुए है. इन दोनों ही तालाबों पर लोक आस्था के पवित्र पर्व छठ का आयोजन होता है. बड़ी संख्या में व्रती एवं श्रद्धालु यहाँ आते हैं. आस्था एवं पवित्रता से ओत प्रोत धार्मिक भावना का प्रवाह देखते ही बनता है.

परंतु छठ व्रत के पावन अवसर पर भी वह निहित स्वार्थी समूह राजनीति करने से बाज नहीं आता जो येन केन प्रकारेण यहाँ की सरकारी सम्पत्तियों पर से अपना अवैध क़ब्ज़ा जमाये रखना चाहता है. इस अवसर पर सामाजिक–सांस्कृतिक गतिविधियां आयोजित कर यह स्वार्थी समूह याद दिलाने की कोशिश करता है कि करोड़ों की सरकारी संपत्ति वस्तुतः उन्हीं के अधीन है. यदि कोई अन्य समूह यहाँ अपनी सामाजिक–सांस्कृतिक गतिविधियाँ अथवा सेवा कार्य करने के लिये आगे आता है तो यह इन्हें नागवार गुजरता है. पिछले साल छठ पर्व के अवसर पर मेरे प्रांगण के बग़ल में स्थित टाऊन हॉल के नीचे वाले मैदान में हुई मार पीट की वीभत्स घटना मुझे आज भी अच्छी तरह याद है. हुआ यह था कि भारतीय जनतंत्र मोर्चा की महिला मोर्चा ने छठ पर्व के दो दिन पूर्व व्रतियों के बीच पाँच तरह के फलों के साथ सूप वितरण का कार्यक्रम रखा था. मैदान में इसके लिए वे इसी स्थान पर कैनोपी लगा रहे थे. दूसरी ओर पहले की तरह छठ पर्व के संध्याकालीन अर्घ्य के बाद इसी स्थान पर एक गायिका का गीत संगीत कार्यक्रम आयोजित करने के लिए तथाकथित सूर्य मंदिर समिति के प्रबंधक स्टेज तैयार कर रहे थे. यह गायिका जिस उत्तेजक गीत के लिए मशहूर है उसका उल्लेख यहाँ करना शालीनता के विरुद्ध प्रतीत होता है. इस कार्यक्रम के लिए उन्होंने जमशेदपुर अधिसूचित क्षेत्र समिति से इस मैदान का आवंटन नहीं कराया था और न ही ज़िला प्रशासन से इस कार्यक्रम की अनुमति ली थी. पहले की ही तरह जमशेदपुर अक्षेस और ज़िला प्रशासन पर धौंस जमाकर तथा अन्य सामाजिक–सांस्कृतिक–राजनीतिक समूहों को डरा धमकाकर इस परिसर से दूर रखने की पुरानी चलन को वे इस बार भी यहाँ आज़माना चाह रहे थे. स्मरणीय है कि कोविड काल के बाद पहली बार खुले माहौल में छठ व्रत का आयोजन इस वर्ष हो रहा था.

भारतीय जनतंत्र महिला मोर्चा की 50 के क़रीब महिला कार्यकर्ता और इनका सहयोग कर रहे क़रीब इतनी ही संख्या में पुरूष कार्यकर्ता अगले दिन करीब एक हजार छठ व्रतियों के बीच सूप वितरण के लिए इस मैदान में कैनोपी लगाने में जुटे थे. सभी निहत्थे थे, शांतिपूर्ण तरीक़ा से अपना काम कर हे थे. पर यह काम उनलोगों को नागवार गुजर रहा था जो विगत 20 वर्षों से इस जगह को अपनी जागीर समझकर मनमानी करने के आदी हो गये थे. उन्होंने भीड़ जुटाया और शांतिपूर्ण तरीक़ा से अपने काम में जुटे भाजमो महिला मोर्चा के कार्यकर्ताओं पर हमला बोल दिया. हमलावर हथियारों से लैस थे, मैदान में पड़ी कुर्सियों को भी हथियार बनाकर हमला कर रहे थे. वहाँ खड़ी पुलिस मूकदर्शक बनी हुई थी. दर्जनों कार्यकर्ता मैदान में डटे थे, मार खा रहे थे, मगर हाथ नहीं उठा रहे थे. वे 1974 जे पी आंदोलन

के दो नारों की याद ताज़ा करा रहे थे. एक, हमला चाहे जैसा होगा, हाथ हमारा नहीं उठेगा और दूसरा, न मारेंगे न मानेंगे. मार पीट से मन नहीं भरा तो ये सूर्य मंदिर के पास बैठे अपने आका के निर्देश पर सिदगोडा थाना कूच कर गए, वहाँ भी हंगामा खड़ा किया और एफआईआर दर्ज किया.

मारपीट की इस घटना ने रंग लाया. इसकी व्यापक चर्चा हुई. मीडिया में भी और चौक चौराहों पर भी लोग कहते थे रस्सी जल गई पर ऐंठन नहीं गई. दबंगई की इस घटना ने प्रशासन के कान खड़ा कर दिये. टाऊन हॉल मैदान में गीत संगीत की पारंपरिक महफ़िल सजाने की अनुमति इन्हें नहीं मिली. वैकल्पिक स्थान के रूप में इन्होंने प्रशासन से शंख मैदान माँगा. जिन्हें वर्षों रोब झाड़ने की आदत थी शंख मैदान में कार्यक्रम की अनुमति देने के लिए वे प्रशासन के सामने मिमियाने लगे. प्रशासन के पास शंख मैदान आवंटित करने की लिखित अधियाचना की, अर्ज़ी लगाया. प्रशासन की शर्तें मानीं. प्रशासन ने इस शर्त पर वहाँ कार्यक्रम की अनुमति दे दी कि लटके झटके वाले गीत नहीं होंगे, केवल भजन होंगे. पहली बार इन्हें एहसास हुआ कि समय बदल गया है, परिस्थिति में परिवर्तन हो गया है. जो हाथ निहत्थों पर हमला के लिए उठे थे, वे शासन के समक्ष मिन्नत करने में जुड़ गये, हथजोडी करने लगे. ऊँट पहाड़ के नीचे आ गया. वर्षों बाद मुझे सुकुन मिला. पवित्र छठ पर्व पर लटके झटके वाले कानफोड़ू फ़िल्मी गानों और इशारों के अभिशाप से छुटकारा मिला. मेरी प्रसन्नता का तो पारावार नहीं रहा. इस वर्ष छठ पर्व के अवसर पर यहाँ दो सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए. एक कार्यक्रम हुआ इस स्थान पर क़ब्ज़ा करने का ध्वस्त मनसूबा पालने वाली मनबढ़ू जमात का शंख मैदान में, तो दूसरा कार्यक्रम हुआ क्रूर हमलावरों का शांतिपूर्ण सामना करने वालों का उस मैदान में जहां मैं यानी चिल्ड्रेन पार्क पहले स्थापित था.

कोविड काल बीतने के बाद मेरे और मेरे आस पास खड़ी सरकारी संरचनाओं के संबंध में कतिपय ऐसे निर्णय सरकार की तरफ़ से हुए जिनका उल्लेख करना मुझे प्रासंगिक प्रतीत हो रहा है. यदि इनका ज़िक्र मैं न करूँ तो ये घटनाक्रम सरकारी संचिकाओं के भीतर ही बंद होकर रह जाएँगे. जनता के सामने ये तथ्य नहीं आ पाएँगे कि किस भाँति मैं और मेरी ही तरह सरकारी खर्च पर वहाँ खड़ी अन्य इमारती संरचनाएँ और भूखंड निहित स्वार्थियों के अवैध क़ब्ज़ा से मुक्त हो पाए. इसकी शुरुआत 2020 से हुई जब जमशेदपुर पूर्वी विधानसभा क्षेत्र के प्रतिनिधित्व में परिवर्तन हुआ, पूर्वी परिवर्तन की जन मुहिम कामयाब हुई. नई विधानसभा के पहले बजट सत्र के बीच ही कोविड धमक गया. जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया. मांगलिक

कार्य रूक गये. हमारे प्रांगण में वीरानी छा गई. पूर्वी विधानसभा क्षेत्र से निर्वाचित विधायक सरयू राय और उनके तमाम सहयोगी कोविड पीड़ितों की सहायता में जी जान से जुट गये. कोविड पीड़ितों का सेवा कार्य महीनों चलाया. धर्म की आड़ में धंधा करने वालों का कोविड काल में कहीं अता–पता नहीं था. तभी एक विचित्र माँग क्षेत्र से आने लगी. इस माँग की अनुगूँज मेरे सूना पड़े प्रांगण तक पहुँच रही थी. वह माँग उनकी ओर से आ रही थी जिन्होंने सोन मंडप और यात्री निवास को मांगलिक कार्य के लिए आरक्षित कराया था और इसके लिए अग्रिम राशि का भुगतान किया था. पर कोविड–19 के कारण इन परिवारों के मांगलिक कार्य स्थगित हो गये थे. ऐसे लोग सोन मंडप यात्री निवास आदि के आरक्षण हेतु दिये गये अग्रिम भुगतान की राशि वापस करने का माँग जेएनएसी कर रहे थे. इस क्षेत्र के नवनिर्वाचित विधायक सरयू राय के सामने यह माँग करने वालों का दूरभाष पर ताँता लग गया. उन्होंने पता किया तो बात सामने आई कि जमशेदपुर अधिसूचित क्षेत्र समिति की लापरवाही और इसके कारकूनों की मिलीभगत तथा अलिखित सांठ–गांठ के कारण एक ख़ास समूह ने सोन मंडप और यात्री निवास पर लंबे समय से क़ब्ज़ा कर रखा है. इस क़ब्ज़ाधारी जमात को पूर्व हो चुके क्षेत्र के विधायक और राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री का संरक्षण प्राप्त है. यह जमात उनकी खासमखास है.

विधायक सरयू राय ने लोगों की अग्रिम राशि लौटाने के लिए जेएनएसी पर दबाव डाला तो माजरा सामने आ गया. कलई खुल गई. फिर तो इसकी परत दर परत उघड़ने लगी, सच्चाई सामने आने लगी. जमशेदपुर अक्षेस की आड़ लेकर कौन मलाई खा रहे थे इसका पता चल गया. कौन मेरे प्रांगण में पहुँचने के लिये वसूली कर रहा था? कौन पार्क में प्रवेश के लिये अवैध टिकट काट रहा था? यात्री निवास और सोन मंडप के आरक्षण का पैसा कौन हड़प रहा था? यह पैसा कहाँ जमा हो रहा था? इसका भेद खुल गया. विधायक सरयू राय ने जेएनएसी से हिसाब माँगा तो उन्हें बताया गया कि 2020 के पहले इन भवनों से होने वाली आमदनी की राशि जमशेदपुर अक्षेस के बैंक ख़ाता में जमा नहीं होती थी, ऐसी जमा राशि का जेएनएसी के किसी रजिस्टर में कोई उल्लेख नहीं है. 2020 के बाद प्राप्त राजस्व का तो जेएनएसी ने हिसाब दे दिया पर 2020 के पहले का नहीं दे पाये. दबाव बनाने पर पता चला कि इन भवनों से होने वाली आमदनी को जमा करने के लिये बैंक ऑफ बड़ौदा के भुईयाडीह शाखा में एक संयुक्त बचत खाता संख्या 24890 1000 12563 श्री पवन अग्रवाल और श्री कमलेश सिंह के नाम से खोला गया था. 28 जनवरी 2020 तक इस बचत खाता में 13,59,476 रूपया बचा था. जमशेदपुर

अक्षेस ने कड़ाई किया तो दो बैंक ड्राफ़्ट के माध्यम से इन्होंने यह राशि अक्षेस को लौटा दिया और उसी दिन यह बैंक खाता बंद कर दिया.

कौन हैं ये पवन अग्रवाल ? कौन हैं ये कमलेश कुमार सिंह ? एक तत्कालीन मुख्यमंत्री के विधायक प्रतिनिधि थे और दूसरे सूर्य मंदिर समिति के कार्यकारी अध्यक्ष. मेरे टूटे अंजर–पंजर को जोड़कर मुझे पुनःस्थापित करते समय अक्षेस के अधिकारी, अभियंता एवं कर्मी इस बारे में बतिया रहे थे. एक ने इस पर शंका व्यक्त किया तो दूसरे ने तुरंत इसका विस्तृत विवरण सामने रख दिया और तैश में मुग़ल काल से चली आ रही यह कहावत जड दिया कि हाथ कंगन को आरसी क्या और पढ़े लिखे को फ़ारसी क्या? उन्होंने कमलेश सिंह की चिट्ठी बैंक खाता का विवरण और बैंक ड्राफ्ट की फोटो कॉपी सामने रख दी. यह विवरण देखकर मैं चकित रह गया, हतप्रभ हो गया. सोचने लगा –क्या धर्म के नाम पर लंबी चौड़ी डींग हांकने वालों से ''माले मुफ़्त दिले बेरहम'' का ऐसा कृत्य अपेक्षित है?

सर्वविदित है कि जिसे 2019–20 में बंद कर दिया गया वह अनधिकृत बैंक खाता वर्ष 2015–16 के पहले किसी दिन खोला गया होगा. दिनांक 15.12.2016 तक इस बैंक खाता में चार लाख सोलह हजार पाँच सौ सतरह (4,16,517) रुपया का बैंक बैलेंस था. दिसंबर 2016 से जनवरी 2020 के बीच इस बैंक खाता से लेन–देन की जाँच हो तो सरकारी सम्पत्ति से व्यवसाय कर निजी लाभ कमाने वालों की साजिश का खुलासा हो जाएगा. गौर करने लायक है कि पर्यटन विभाग ने अपनी परिसंपत्तियों के संचालनकर्त्ता का चयन करने के लिए 15.12.2016 को निविदा प्रकाशित किया था. इसके पहले से ही मुख्यमंत्री के विधायक प्रतिनिधि पवन अग्रवाल और सूर्य मंदिर समिति के कार्यकारी अध्यक्ष कमलेश कुमार सिंह इन्हें अनधिकृत रुप से चलाते थे. तभी तो इनके द्वारा सोन मंडप समिति के नाम से बैंक ऑफ बड़ौदा की भुईंयाडीह शाखा में खोले गये संयुक्त बैंक खाता में 15.12.2016 तक 4,16,517 रुपये का बैंक बैलेंस बचा हुआ था, स्पष्ट है कि तत्कालिन मुख्यमंत्री के साथ सांठ–गांठ कर इन्होंने इन परिसंपत्तियों को सरकारी फाइल में असंचालित घोषित करा दिया और इसका संचालन जनवरी 2020 तक करते रहे, इससे होने वाली आमदनी अपने खोले गये बैंक खाता में जमा करते रहे. जब श्री रघुवर दास मुख्यमंत्री पद से हट गए और झारखंड में नई सरकार बन गई तब उन्होंने यह खाता बंद कर दिया यानी सरकार खत्म, खाता बंद. 2015–16 और 2019–20 के बीच की अवधि की खासियत है कि इस अवधि में इनके मुख्य संरक्षक झारखंड राज्य के सत्ता शीर्ष पर काबिज थे.

जमशेदपुर पूर्वी विधानसभा क्षेत्र की जनता ने जैसे ही इन्हें सत्ता से हटाया, वैसे ही एक नामी–गिरामी घोटालेबाज ने एहसान का बदला चुकाने और जनता को चिढ़ाने के लिए एक चमचमाती नई इनोवा कार खरीदकर इन्हें सौंप दिया. 2015–16 से 2019–20 के बीच सरकार में भ्रष्टाचार को बुलंदी तक पहुँचाने वाला सरगना प्रेम प्रकाश (जो फिलहाल जेल के सींकचों में बंद है और जिसके भ्रष्ट कारनामों के नये किस्से रोज सामने आ रहे हैं) ने अपने पार्टनर पुनीत भार्गव के नाम से जनवरी 2020 में एक नई इनोवा कार खरीदा और एग्रिको के गैराज में पहुँचा दिया. झारखंड की सड़कों पर पीछे पुलिस एसकॉर्ट और आगे पुलिस पायलट गाड़ियों के बीच यह इनोवा कार दो साल तक तक फर्राटा भरते रही. यह इनोवा कार उस दिन से गायब है जिस दिन आई.ए.एस. अधिकारी पूजा सिंघल के यहाँ मनरेगा घोटाला में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने छापा मारा. उस दिन से कई दिनों तक मेरे प्रांगण में यह चर्चा गरम रही कि जिस मनरेगा घोटाला में दोषी पाकर 'ईडी' ने श्रीमती पूजा सिंघल को जेल में डाल दिया है, उसी घोटाला में वर्ष 2018 में झारखंड की डबल इंजन की सरकार के मुख्यमंत्री ने उन्हें बरी कर दिया था, निर्दोष करार दिया था, क्लीन चिट दे दिया था, ससम्मान उनकी प्रोन्नति की राह प्रशस्त कर दिया था. लोग सवाल कर रहे थे ईडी की जाँच पर कि यह कैसी जाँच है जो 2020 से पीछे जाने में हिचकिचा रहे हैं, पूजा सिंघल जेल में और उन्हें क्लीन चिट देने वाले से पूछताछ तक नहीं ! जितने मुँह उतनी बातें.

इसे देखकर अपने बारे में कुछ पुरानी बातें मुझे याद आ गईं जिन्हें मैं आप सब के सामने रखना चाहता हूँ. हो सकता है ये बातें इस कथानक में पहले भी आपके सामने आई हों. परंतु फिर से इसे दुहराने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूँ. एक बार पहले भी आपसे ज़िक्र किया हूँ कि मेरा पहला आधुनिकीकरण 2010 में हुआ था. इसके बाद वर्ष 2015 में पुनः मेरा विस्तार हुआ. आधुनिकीकरण के नाम पर हुए इस विस्तार पर क़रीब 35 लाख 26 हजार 74 रूपये झारखंड सरकार के पर्यटन विभाग ने मेरे उपर खर्च किया. इस बार मेरे साथ साथ सोन मंडप और शंख मैदान का भी विस्तार आधुनीकीकरण के नाम पर किया गया. इस दौरान मेरे प्रांगण में क़रीब एक दर्जन अतिरिक्त उपस्कर लगाये गये. इन पर 35 लाख 26 हजार 74 रूपये खर्च करने का प्राक्कलन ज़िला परिषद, पूर्वी सिंहभूम ने तैयार किया. यह प्राक्कलन 98 लाख 73 हजार 975 रुपये के उस विस्तृत प्राक्कलन का हिस्सा है जिसे मुझ सहित शंख मैदान पार्क और सोन मंडप के आधुनिकीकरण के लिए तैयार किया गया था. इस प्राक्कलन पर 11 अप्रैल 2015 की तिथि अंकित है. पर्यटन

विभाग के मुख्य अभियंता ने 8 जून 2015 को इसे संपुष्ट किया. तदनुसार यह राशि पर्यटन विभाग से ज़िला परिषद को प्राप्त हुई. इस प्रकार 2010 से 2015 तक मेरे उपर पर्यटन विभाग ने कुल 53,13,774 रुपये खर्च किया. इससे इस बात पर मुहर लग गई कि मेरा जन्म पर्यटन विभाग की कोंख से ही हुआ है. 2016 तक मेरे प्रांगण में कुल करीब डेढ़ दर्जन से अधिक उपस्कर लग चुके थे. यह बात अलग है कि जब स्वेच्छारियों द्वारा अनधिकृत रूप से मुझे मेरे प्रांगण से उखाड़ कर बाहर ले जाया जा रहा था तब ये सभी उपस्कर वहाँ मौजूद नहीं थे. 5 सदस्यीय तथ्यान्वेषण समिति द्वारा 22 फ़रवरी 2022 को उस समय जप्त किए गये उपस्करों की सूची जिला प्रशासन को सौंपा. सौंपी गई यह सूची जमशेदपुर अक्षेस के विशेष पदाधिकारी के कार्यालय में मौजूद है. इस सूची में मात्र 9 उपस्करों का ही उल्लेख है. बाक़ी के उपस्कर वे कहाँ ले गये या मुझे विस्थापित करने के दौरान टूट गये या तोड़ दिये गये इसकी जानकारी तो मुझे विस्थापित करने की साज़िश करने वाले ही दे सकते हैं.

आपको पहले बता चुका हूँ कि वर्ष 2009 के आसपास ही मेरे पडोस में एक यात्री निवास बना. इसका निर्माण भी पर्यटन विभाग के पैसे से ही हुआ. संभव है हम दोनों का निर्माण एक ही समय हुआ हो. निर्माण के बाद सरकार ने अगस्त 2009 में यात्री निवास को झारखंड पर्यटन विकास निगम को सौंप दिया. इसके संचालन में पेंच पड़ने लगा तो कुछ दिन बाद इसे उपायुक्त, पूर्वी सिंहभूम को हस्तांतरित कर दिया. उपायुक्त के हस्तक्षेप से बचने के लिए पुनः 2015 में इसका काग़ज़ी संचालन उपायुक्त से लेकर पर्यटन विकास निगम के हवाले कर दिया गया. वस्तुतः मेरा निर्माण और यात्री निवास का निर्माण हुआ तो पर्यटन विभाग की निधि से मगर हमारा सुचारू संचालन नहीं होने दिया गया. हमारे संचालन में फेंका–फेंकी होती रही, ताल–तिकडम होता रहा. वस्तुतः इसके पीछे हम दोनों पर अवैध क़ब्ज़ा जमाने की साज़िश थी. हमारा अवैध संचालन करने वाले तो पृष्ठभूमि मे अपना काम कर ही रहे थे. पर सरकार का कौन सा विभाग हमारे उपर इनके कब्जा का अवैध कारनामा को सुगम कर सकेगा, इनकी राह में बाधा नहीं खड़ा करेगा इसकी तलाश हो रही थी. यह तलाश पूरी हुई झारखंड पर्यटन विकास निगम के यहाँ जाकर. इसी समय झारखंड में डबल इंजन वाली पूर्ण बहुमत की सरकार बन गई. इसकी आड़ में पर्यटन विकास निगम ने हम दोनों के साथ ही राज्य की अन्य दर्जनों परिसंपत्तियों के साथ भी ऐसा ही किया. काग़ज़ में इन्हें असंचालित अथवा अर्द्ध संचालित दिखा दिया. पर वास्तविकता कुछ और थी. इसका लाभ उठाकर सत्ता संरक्षण में सक्रिय

एक मनबढ़ू स्वार्थी समूह ने शासन–प्रशासन की नाक के नीचे हमारे संचालन पर अवैध क़ब्ज़ा जमा लिया. मेरे और यात्री निवास पर तथा सोन मंडप और शंख मैदान पार्क पर क़ब्ज़ा जमा लेने वाले ये समूह एक ही गोत्र के थे, एक ही पालकी के कहार थे, एक ही सूत्रधार से नियंत्रित और परिचालित होते थे. यह सूत्रधार उस समय झारखंड सरकार के सत्ता शीर्ष पर विराजमान था. सैंया भये कोतवाल फिर डर काहे का की कहावत पूरी तरह चरितार्थ हो गई.

निर्माण शुरू होने के पहले किसने हमारा शिलान्यास किया, निर्माण पूरा हो जाने के बाद किसने उद्घाटन किया इसका कोई चिन्ह न तो मेरे प्रांगण में मौजूद है और न ही यात्री निवास मे विद्यमान है. यह बताने वाला किसी शिलापट्ट का भग्नावशेष भी नही है यहाँ पर. पूर्वी सिंहभूम के ज़िला पर्यटन कार्यालय में भी इस बारे में कोई दस्तावेज संधारित नहीं है. यह विडम्बना है. इस दरम्यान ''जो सम्पत्ति सरकारी है, वो संपत्ति हमारी है'' की बदनीयत से हमें अपनी परिसम्पत्ति मानकर हमारा उपयोग करने में इस हड़पू गोत्र के कुछ लोगों ने ज़रूरत से ज़्यादा दिलचस्पी लेना शुरू कर दिया. वे तत्कालीन सत्ता तंत्र के समीप थे. उन्होंने मुझे भी और यात्री निवास को भी सरकारी नियंत्रण से बाहर करने की सफल जुगत लगाया. उपायुक्त के प्रभा मॉडल से हटाकर फिर से हमें झारखंड पर्यटन विकास निगम को सौंप दिया गया. इस अवधि में हमारा संचालन कैसे कैसे होते रहा ? हमें किसने संचालित किया ? किस प्रकार संचालित किया ? इस बारे में पर्यटन विभाग, पर्यटन विकास निगम, ज़िला प्रशासन कुछ भी कहने से कतरा रहे हैं, सच स्वीकारने और बताने का साहस नहीं है इनमें. जो दस्तावेज इनकी संचिकाओं में सिलसिलेवार रक्षित होने चाहिए वे दस्तावेज ढूँढे नहीं मिल रहे हैं. यह स्थिति सरकारी संपत्तियों के सृजन, रख–रखाव, संरक्षण, परिचालन और निहित स्वार्थी तत्वों की साँठगाँठ पर सवालिया निशान खड़ा कर रही है. यह सवालिया निशान मेरे यानी चिल्ड्रेन पार्क के, यात्री निवास के, सोन मंडप के, सूर्य मंदिर के समीपस्थ शंख पार्क के उपर समान रूप से खड़ा है. हम सभी भुक्तभोगी हैं, शिकार हैं, इसके पीछे की राजनीतिक साज़िश के, अवैध कमाई की खुला खेल के.

इस संदर्भ में आगे जो हुआ उसे तो डंके की चोट पर हो रही खुली साज़िश ही कहा जा सकता है. हुआ यह कि दिनांक 25 मार्च 2016 को झारखंड सरकार के लोक उपक्रम झारखंड पर्यटन विकास निगम ने एक निविदा प्रकाशित किया. निविदा का उद्देश्य था जमशेदपुर के सिदगोडा स्थित चिल्ड्रन पार्क यानी मैं और यात्री निवास का संचालन करने के लिए सुयोग्य संचालक की नियुक्ति करना. किसी

ने निविदा में भाग नहीं लिया या किसी को भाग नहीं लेने दिया गया, तो दुबारा 10.12.2016 को पुनः इसके लिए निविदा प्रकाशित हुई. इस बार भी इन्हें चलाने में किसी ने रुचि नहीं दिखाया या सत्ता की धौंस में किसी को रुचि दिखाने नहीं दिया गया. सरकार द्वारा हमें स्वयं संचालित करने के बदले अपने रिकार्ड में मुझे और यात्री निवास को असंचालित दिखा दिया गया. वस्तुतः यह एक चाल थी. सच्चाई यह है कि हमारे निर्माण के समय से ही राजनीतिक संरक्षण प्राप्त एक निहित स्वार्थी समूह ने हम पर क़ब्ज़ा जमा रखा था. हमारे संचालन के लिए विज्ञापन निकालना इनकी चाल थी. विज्ञापन में किसी को भाग नहीं लेने देना इनकी साजिश थी. तत्कालीन सत्ता शीर्ष की शह पर हमारा अनधिकृत संचालन यही राजनीतिक संरक्षण प्राप्त निहित स्वार्थी समूह करने लगा. उन्होंने हम पर वास्तविक क़ब्ज़ा जमा लिया. ''माल महाराज का और मिर्ज़ा खेले होली'' की कहावत चरितार्थ हो गई.

इस बीच 2019 में एक दिन महालेखाकार कार्यालय की टीम मेरे प्रांगण में पहुँची. टीम ने समीपवर्ती स्थलों – यात्री निवास, सोन मंडप, सूर्य मंदिर के समीप स्थित पार्क आदि – का भी भ्रमण किया. इन्होंने देखा कि मेरे यहाँ आने के इच्छुक बच्चे, बच्चियाँ, उनके अभिभावक इंट्री गेट पर 5 रूपये का टिकट ख़रीद रहे हैं. एक महिला वहाँ टिकट काट रही है. सूर्य मंदिर की बाउंड्री गेट के पास कुर्सी लगाकर बैठा एक आदमी टिकट चेक कर रहा है. अलग से 5 रूपये का टिकट सूर्य मंदिर के पार्क में जाने के लिये काटा जा रहा है. सोन मंडप में शादी विवाह का कार्यक्रम चल रहा है. यात्री निवास भी सामाजिक, मांगलिक कार्यक्रमों के लिए बुक है. सीएजी की टीम को इसपर सहसा विश्वास नहीं हो रहा था. ये आश्चर्यचकित थे. इनके सामने घोर असमंजस था. भारी उलझन में पड़ गये थे ये लोग. वहाँ का दृश्य देखकर चकित थी सीएजी की टीम. सरकारी संपत्ति के ऐसे दुरुपयोग से वे हतप्रभ थे यह देखकर वे हैरान थे कि सीएजी ऑडिट के दौरान जिन स्थलों को पर्यटन विभाग ने, शासन–प्रशासन ने असंचालित दिखाया था, बताया था कि वे बंद हैं, चल नहीं रहे हैं. दो बार विज्ञापन देने के बाद भी उन्हें चलाने के लिए कोई सामने नहीं आया. स्थल निरीक्षण के दौरान सीएजी टीम को साफ दिख रहा था, प्रत्यक्ष पता चल रहा था कि वे सभी स्थल तो गुलज़ार हैं. इनकी बुकिंग हो रही है. इनमें प्रवेश के लिए टिकट बेचा जा रहा है. लोग लाईन में खड़ा होकर टिकट ख़रीद रहे हैं. पार्क और प्ले ज़ोन के अन्दर में खचाखच भीड़ है. यात्री निवास, सोन मंडप आदि भवनों की बुकिंग के लिये वेटिंग लिस्ट है.

उन्हें भरोसा नहीं हो रहा था कि खुले–आम, दिन–दहाड़े, शासन–प्रशासन

की नाक के नीचे इतना बड़ा फर्जीवाडा चल रहा है. वह भी उस स्थान पर जहां जमशेदपुर आने पर राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री कुर्सियाँ सजाकर बैठते हैं, दरबार लगाते हैं. ज़िला प्रशासन के आला अफ़सर उनके सामने हाथ बांधे खड़ा रहते हैं. हमारा अवैध संचालन करने वाले वहाँ की व्यवस्था सम्हालने और गुणगान करने में लगे रहते हैं. हम सभी संरचनाओं के संचालन से मिलने वाले जो पैसे सरकारी ख़ज़ाना में जमा होने चाहिए उन्हें मुट्ठी भर सत्ता पोषक स्वार्थी लोग अपनी जेबों में भर रहे हैं. जो संरचनाएँ करोड़ों रूपये की लागत से सरकारी जमीन पर बनी हैं, लाखों खर्च कर सरकार ने जिनका विकास एवं विस्तार किया है, एक बार, दो बार आधुनिकीकरण कराया है उनपर क़ब्ज़ा जमाकर कुछ लोग खुले आम व्यवसाय कर करा रहे हैं. इंडस्ट्री विदाउट इंवेस्टमेंट (बिना कुछ लगाए भारी मुनाफ़ा कमाने का उद्योग) चला रहे हैं. किसी दूर दराज की जगह पर ऐसा होता तो लोग एक क्षण के लिये मान भी लेते. क्यों, कैसे जैसा सवाल नहीं पूछते. पर यह तो जमशेदपुर शहर शहर मे, यहाँ की हृदय स्थली सिदगोड़ा में चल रहा है. उस स्थान पर चल रहा है जहां राज्य के मुख्यमंत्री आते हैं तो दरबार करते है, प्रेस मीडिया से रू–ब–रू होते हैं, ज़िला और प्रदेश के आला अधिकारी उपस्थित रहते हैं. तब फिर कौन दूसरा ज़िम्मेदार हो सकता है इसके लिए? किसे हिम्मत है अवैध कारोबार चलाने वालों से पूछताछ करने की ? किसे जुर्रत होगी, उनका हिसाब किताब देखने की ? मुझे फिर यह कहावत याद आ गई – सैंया भये कोतवाल, फिर डर काहे का.

सीएजी टीम के सदस्य इस दौरान कई बार मेरे प्रांगण में आए, वहाँ खेल रहे बच्चों से पूछा, उनका टिकट देखा. यही सवाल उन्होंने मंदिर के सामने वाले शंख मैदान और तालाबों के सामने पार्क में भ्रमण कर रहे लोगों से भी किया, उनके टिकट भी देखा. सोन मंडप और यात्री निवास में भी उन्होंने बुकिंग रजिस्टर खंगाला. जिनका आयोजन वहाँ चल रहा था उनसे भी जानकारी लिया. उन्हें पता चला कि आगे कई महीनों तक ये स्थान मांगलिक कार्यक्रमों के लिये बुक हैं, बुकिंग की वेटिंग लिस्ट चल रही है वहाँ, इसके लिए पैरवी पैग़ाम चल रहा है. उन्होंने खुद से सवाल पूछा, एक दूसरे से शंका समाधान किया. मेरे प्रांगण में खड़ा होकर भी वहाँ आने जाने वालों से, जिन्हे तकनीकी भाषा में फुट फॉल कहा जाता है, का आकलन किया, संख्या का अनुमान लगाया. मैं उनके बीच हो रही चर्चा का गवाह हूँ. वे पूरी तरह आश्वस्त हो गए कि सरकार और प्रशासन की संचिकाओं में जो अंकित है वह गुमराह करने वाला है, भ्रामक है, झूठ है, साज़िश का हिस्सा है. उन्होंने तय किया कि सच्चाई उजागर करेंगे, भ्रमजाल तोड़ेंगे, अपने प्रतिवेदन में दूध का दूध पानी का

पानी करेंगे. फिर आगे जिसके अधिकार में जितना है वह करेगा, देखा जाएगा. पर एक संवैधानिक संस्था के पदाधिकारी के नाते वे अपना कर्तव्य ज़रूर निभाएँगे. सत्य को सामने लाएंगे. सरकार को, विधानसभा को आईना दिखाएँगे. विधानसभा में प्रस्तुत होने के बाद जब हमारा प्रतिवेदन लोक उपक्रम समिति के सामने विचारार्थ जाएगा तो समिति आगे की भूमिका तय कर सकती है. उनका दायित्व है माननीय राज्यपाल के माध्यम से विधानसभा में अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत कर देने का. सीएजी की अंकेक्षण टीम ने ऐसा ही किया. न केवल जमशेदपुर बल्कि राज्य के अन्य स्थानों पर बनी पर्यटन विभाग की संरचनाओं की स्थिति के बारे में भी प्रतिवेदन दिया.

नियमानुसार सीएजी के अंकेक्षण प्रतिवेदन का कंडिका प्रारूप आपत्तियों सहित पहले सरकार के समक्ष गया. सरकार के पर्यटन विभाग से इस पर स्पष्टीकरण माँगा गया. जवाब से संतुष्ट नहीं होने पर यह प्रतिवेदन विधानसभा में प्रस्तुत हुआ. सभा अध्यक्ष ने विधिसम्मत कारवाई के लिए इसे विधानसभा की लोक उपक्रमों से संबंधित समिति के सामने आगे की कारवाई के लिए भेज दिया. विधानसभा में प्रस्तुत अपने जाँच अपने प्रतिवेदन में सीएजी ने जो लिखा है उसका संक्षिप्त विवरण निम्नवत है :–

यात्री निवास, बारीडीह, सिदगोडा : झारखंड पर्यटन विकास निगम ने अगस्त 2019 में सूचित किया कि यात्री निवास निष्क्रिय पड़ा हुआ है. परंतु जनवरी 2020 में संयुक्त भौतिक सत्यापन में पाया गया कि इसका उपयोग वैवाहिक कार्यक्रमों के लिए हो रहा है. इसमें झारखंड सरकार का/ पर्यटन विकास निगम का साईन बोर्ड / प्रतीक चिन्ह भी नहीं लगा हुआ है. जबकि इसे आउटसोर्सिंग करने के लिए मार्च 2016 में निविदा आमंत्रित की गई थी.

चिल्ड्रेन पार्क, सिदगोड़ा : पर्यटन विकास निगम के अभिलेखों में इसे असंचालित दिखाया गया है, जबकि इसके आउटसोर्सिंग के लिए मार्च 2016 और दिसंबर 2016 में निविदाएँ निकाली गई थी. संयुक्त भौतिक सत्यापन (जनवरी 2020) में पाया गया कि इसे एक स्थानीय समिति द्वारा चलाया जा रहा है. सरकार/ पर्यटन विकास निगम के खाते में कोई राजस्व नहीं जमा किये गये जबकि टिकट बेचे जा रहे थे.

सोन मंडप, सिदगोड़ा : इसका और पार्क का सौन्दर्यीकरण 98,73,975 रुपये के खर्च पर वर्ष 2015–16 में हुआ. सीएजी ने इसका ऑडिट तो नहीं किया, पर पाया कि इसका संचालन भी एक स्थानीय समिति द्वारा किया जा रहा था. बैंक ऑफ बड़ौदा के भुईयाडीह शाखा में इसका संयुक्त बचत बैंक खाता संख्या 24890

1000 12563 श्री पवन कुमार अग्रवाल और श्री कमलेश कुमार सिंह के नाम पर खोला गया था, जिसमें सोन मंडप से होने वाली आमदनी जमा होती थी. इसे सरकार के बैंक खाता में नहीं जमा किया जाता था.

यात्री निवास, सिदगोड़ा : इसका निर्माण भी पर्यटन विभाग की निधि से किया गया है. इसके संचालन के लिए मार्च 2016 और दिसम्बर 2016 में निविदायें आमंत्रित की गई थी. पर पर्यटन विभाग और पर्यटन विकास निगम के रिकॉर्ड में इसे भी असंचालित दिखाया गया था. जब कि 2020 में भौतिक सत्यापन के दौरान सीएजी की टीम ने पाया कि इसका उपयोग भी सामाजिक एवं मांगलिक कार्यों के लिए हो रहा है. इससे प्राप्त होने वाला राजस्व जिला प्रशासन / जे.एन.ए.सी अथवा पर्यटन विभाग में जमा नहीं हो रहा है. एक निजी एजेंसी इसका संचालन कर रही है और यात्री निवास की बुकिंग से होने वाली आमदनी को अपने पास रख रही है ।

जब श्री सरयू राय, जमशेदपुर पूर्वी से दिसंबर 2019 में विधायक निर्वाचित हुए तो उन्होंने सोन मंडप और यात्री निवास को जमशेदपुर अक्षेस के अधीन कराया. तब कागजातों के निरीक्षण के दौरान बैंक ऑफ बड़ौदा में एक अनधिकृत समिति द्वारा खोले गये खाता का पता चला. क़ानूनी कारवाई की धमकी मिली तब इन्होंने उस खाता में शेष बचा 13,59,476 रुपया दो बैंक ड्राफ़्टों के द्वारा 31 जनवरी 2020 को जेएनएसी को वापस किया. शुरु से इस खाता में कुल कितना धन जमा हुआ और समय–समय पर उसे सरकार के खाता में अभी तक जमा किया गया इसकी पूछताछ इसके संचालकों से नहीं हुई है.

सीएजी ने अपने प्रतिवेदन में यात्री निवास और चिल्ड्रेन पार्क के बारे में उसी समय स्तुस्थिति से सरकार को अवगत कराया. पर सरकार ने मौन साध लिया. पर्यटन विभाग और पर्यटन विकास निगम से जवाब नहीं मिला तब सीएजी ने अंतिम प्रतिवेदन राज्यपाल के निर्देशानुसार विधानसभा में रख दिया. सीएजी का यह प्रतिवेदन विधानसभा के मानसून सत्र 2021 में प्रस्तुत किया गया. इसमें 31 मार्च 2019 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष का अंकेक्षण प्रतिवेदन था. नियमानुसार ऐसे प्रतिवेदनों पर विधानसभा की लोक उपक्रम समिति विचार करती है. समिति ने बार बार पर्यटन विभाग और पर्यटन विकास निगम से सीएजी प्रतिवेदन के निष्कर्षों के बारे में पूछा. समिति ने पूछा कि सीएजी टीम ने स्थल निरीक्षण कर इन्हें संचालित बताया तो सरकारी रिकॉर्ड में असंचालित दिखाई गईं परिसम्पतियों का भौतिक सत्यापन उपायुक्त अथवा ज़िला पर्यटन पदाधिकारी से क्यों नहीं कराया गया?

प्रशासन और पर्यटन विकास निगम के अधिकारी इस पर वर्षों से चुप्पी क्यों साधे रहे हैं? सत्ता परिवर्तन के बाद भी इनकी मिलीभगत बंद क्यों नहीं हुई है?

सरकारी अधिकारी इन सवालों पर भले ओठ सिल कर रखें परंतु मेरे प्रांगण में खेलने के लिये आने वाला जमशेदपुर का बच्चा बच्चा जानता है कि मेरे प्रांगण में प्रवेश के पहले सूर्य मंदिर के पास बने पार्क में प्रवेश करने के लिए 5 रुपये का टिकट लेने का फ़ैसला किसका है? काउंटर पर बैठकर टिकट कौन काट रहा था? टिकट किस संस्था के मुहर से टिकट बेचा जा रहा था? पार्क के अलावा चिल्ड्रन प्ले ज़ोन में जाने के लिए अलग से अतिरिक्त रुपये 5 का टिकट अप्रैल 2023 तक कौन बेच रहा था ? पार्क में बने तालाबों के एक कोने में खाद्य, पेय आदि बेचने के लिए कियोस्क बनाकर व्यापार कौन कर रहा था? 2016 में दो बाद निविदा प्रकाशित होने के बाद भी चिल्ड्रेन पार्क, यात्री निवास, सोन मंडल आदि का संचालन किसके प्रभाव से नहीं होने दिया गया? किसकी साजिश से सरकारी दस्तावेजों में इन्हें असंचालित दिखाया गया. जबकि इसका अवैध संचालन तत्कालीन मुख्यमंत्री के निकटतम सहयोगियों और संस्थाओं के द्वारा किया जा रहा था. सरकार, पर्यटन विभाग, पर्यटन विकास निगम, ज़िला प्रशासन, ज़िला पर्यटन पदाधिकारी आज भी इस पर चुप्पी साधे हुए हैं. जाँच के क्रम में सीएजी की टीम को शंख मैदान उद्यान में भ्रमण करने वालों से प्रवेश कूपन संख्या 27634 तथा कूपन संख्या 27635 मिले, जिनपर प्रति व्यक्ति 5/– रुपये की दर से ली गई शुल्क की राशि अंकित थी. दिनांक 08.03.2021 को इन्होंने स्थलीय जाँच किया. वहाँ उन्हें प्रवेश शुल्क देकर पार्क में घूमने वाले अनेक आगन्तुक मिले. ऐसा शुल्क वसूलने की अनुमति जिला प्रशासन से तब तक नहीं ली गयी थी. इन टिकटों पर सूर्य धाम उद्यान अंकित था. रस्सी जल गई थी मगर ऐंठन तब भी जस की तस थी.

मुझे अच्छी तरह याद है 2019 विधानसभा चुनाव का वह दृश्य जिसकी चर्चा मेरे प्रांगण में हर खासो–आम से सुनाई पड़ती थी. दिलचस्प मुक़ाबला था जमशेदपुर पूर्व विधानसभा की सीट पर. मैं भी इसी विधानसभा क्षेत्र में ही स्थित हूँ. मुक़ाबले में एक ओर तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास थे, जिनके भाई–भतीजों और सिपहसलारों का रोब दाब देखने, सुनने और सहने का मैं आदी हो गया था. सच कहूँ तो मेरी तथा मंदिर के सामने का पार्क, तालाब, सोन मंडप, यात्री निवास, टाऊन हॉल आदि सभी संरचनाओं पर इन्हीं का मनमाना आधिपत्य था. भले ही मेरे सहित समस्त संरचनाएँ जिस ज़मीन पर बनी थी वह जमीन सरकारी थी, संरचनाओं के निर्माण, मरम्मत, सौंदर्यीकरण पर हुआ समस्त व्यय भी सरकारी

ख़ज़ाना से हुए थे, परंतु इन पर क़ब्ज़ा दास बाबू के परिवारजनों और सिपहसलारों का था. इनकी ऐंठ और रोब की बानगी देखते ही बनती थी. ''अधजल गगरी छलकत जाय'' की तरह इनके विविध कारनामें आए दिन संस्कार और शिष्टाचार की सीमा मर्यादा तोड़ते रहते थे. एक कोने में अवस्थित होने के बावजूद इनकी शोहरत और शरारत की गूंज मुझ तक भी किसी न किसी के मुखारविंद से पहुँच ही ज़ाया करती थी.

चुनाव में दूसरी तरफ़ थे श्री सरयू राय जो श्री रघुवर दास जी की कैबिनेट में एक छोटे से विभाग के मंत्री थे. हालात कुछ ऐसी बनी कि राय बाबू ने पड़ोस का जमा जमाया अपना विधानसभा क्षेत्र छोड़ कर अपने मुख्यमंत्री के चुनाव क्षेत्र में ही उनके विरूद्ध ताल ठोक दिया और जीत गए. भारत के चुनावी इतिहास में यह पहली घटना है जब सरकार का एक मंत्री अपने ही मुख्यमंत्री के विरूद्ध, उन्हीं के क्षेत्र में जाकर निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा और उन्हें पछाड़ दिया. चुनाव प्रचार के दौरान और चुनाव का नतीजा आ जाने के बाद जितने मुँह उतनी बातें मेरे कानों तक पहुँचती थी. इनका विस्तार से ज़िक्र कर आपका समय ज़ाया नहीं करना चाहता. पर इतना ज़रूर कहना चाहता हूँ कि मेरी इस उम्मीद पर पानी फिर गया कि विगत ढाई दशक तक इस क्षेत्र से विधायक रहने, कई बार मंत्री रहने और चुनाव हारने के पूर्व पाँच वर्ष तक राज्य का मुख्यमंत्री रहने के दौरान अर्जित उनकी शक्ति और शोहरत की बदौलत मुझ सहित मेरे प्रांगण परिसर की अन्य परिसंपत्तियों पर क़ब्ज़ा जमाये उनके परिजन और सिपहसलार सलाहियत के साथ इसे क़ब्ज़ा मुक्त कर देंगे. ''त्वदीयं वस्तु गोविन्दम् तुभ्यमेव समर्पयामि'' की तरह सरकारी ज़मीन और सरकारी पैसों से निर्मित मेरे प्रांगण परिसर की समस्त परिसंपत्तियों को जिला प्रशासन के हवाले कर देंगे. पर वे न केवल जमे के जमे रहे बल्कि उनकी उदंडता, उनकी स्वेच्छाचारिता, उनकी तुनक मिज़ाजी पहले से अधिक बढ़ गई. सरकारी परिसंपत्तियों को उन्होंने अपनी संपत्ति में शुमार कर लिया. मानो वे शासन–प्रशासन को चुनौती दे रहे हों कि हम चुनाव भले हार गए, यह मैदान नहीं हारेंगे. वर्षों से बिना खिलाये पिलाये नियमित अंडा देने वाली मुर्गी की तरह मेरे प्रांगण परिसर पर से अपना क़ब्ज़ा नहीं छोड़ेंगे. इनका कब्जा हटाने के लिए जमशेदपुर के अनुमंडलाधिकारी के सामने आना पड़ा. कानूनी कारवाई की धमकी मिली तब जाकर इन्होंने अवैध वसूली करना छोड़ा.

मेरी स्थापना हुए 14 वर्ष के क़रीब हो गये. इतने दिनों बाद आज मैं आपको अपनी आपबीती सुना रहा हूँ. इस बीच मुझ पर क्या क्या बीता है, किन किन

घटनाओं का गवाह रहा हूँ मैं और किस्सागोई के कितने दृष्टांत हैं मेरी ज़ेहन में, इन सबको एक बार में बता देना, सभी आपबीतियों को एक बार में कह देना, सुना देना आसान नहीं है. यह आवश्यक भी नहीं है. कथानक पर कथानक जोड़ कर मैं आत्म कथ्य को बोझिल भी नहीं बनाना चाहता. कोई मेरे पास आता है, बतियाता है या आसपास घटने वाली घटनाओं की आहटें मुझ तक पहुँचती हैं या जो कुछ घटना–परिघटना मेरे साथ घट जाती हैं वे मेरी आपबीती का हिस्सा बन जाती हैं, मेरे सुख दुख की यादगार बन जाती हैं. मैं कोई यायावर तो हूँ नहीं कि भ्रमण कर जगह–जगह की रोचक घटनाएँ इकट्ठा कर सकूँ, उन्हें कह सकूँ, बता सकूँ, सुना सकूँ. हाँ कई यायावर मेरे संपर्क में ज़रूर आते रहते हैं जो मुझ स्थावर तक देश दुनिया की कथाएं बता–सुना जाते हैं. खुद मेरे ही साथ क्या हुआ, क्या हो रहा है, क्या होने वाला है इसकी जानकारी भी दे जाते हैं. बच्चों की अठखेलियों से मौक़ा निकाल कर मैं यह सब मगन होकर सुनता हूँ, मन ही मन गुनता हूँ.

वैसे तो बहुत सारी जानकारियाँ, सूचनाएँ मेरे पास हैं. पर फ़िलहाल मैं एक वाक़या का ज़िक्र कर यह कथानक समेटना चाहता हूँ. हुआ यह कि एक रोज ऐसे ही एक मौक़े पर मेरे परिसर में स्वच्छ ऊर्जा का उत्पादन होने की बात मेरे कानों में पड़ी. स्वच्छ ऊर्जा का जनजीवन में क्या महत्व है इसके बारे में रोचक वार्तालाप मेरे समीप चल रहा था. मैं भी कान लगाकर सुनने लगा. पता चला कि मेरे परिसर के निकटतम पड़ोसी भवनों की छतों पर सौर ऊर्जा उत्पादन के संयंत्र लगाए गए हैं. टाऊन हॉल, सोन मंडप, यात्री निवास की छतों पर सौर पैनल लगाकर सूर्य भगवान की किरणों में निहित ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदलकर उसका उपयोग सूर्य मंदिर, शंख मैदान पार्क में हो रहा है. यह सुनकर मुझे अच्छा लगा. मैं सोचने लगा कि काश! भगवान सूर्य प्रदत्त नैसर्गिक, स्वच्छ सौर ऊर्जा का आनंद मैं भी ले पाता. यहाँ तक तो सब कुछ ठीक ठीक लगा. पर कुछ समय बाद यह सामान्य वार्तालाप तीखी बहस में बदल गया. बहस इस बात पर कि क्या सौर ऊर्जा का कनेक्शन उस स्थल तक आया था जहां मैं विस्थापित होने के पहले स्थापित था. इस बारे में मतांतर ने ही वार्तालाप को बहस में बदल दिया. कुछ व्यक्तियों की आवाज़ें हाँ में थी तो कुछ की ना मे. इनके बीच हो रही बहस का तीखापन बढ़ने लगा था. मैं असहज महसूस कर रहा था.

इस बहस ने धीरे धीरे आरोप– प्रत्यारोप का रूप ले लिया. प्रश्न यह उठा कि उपर वर्णित जिन भवनों पर सौर ऊर्जा उत्पादन के पैनल लगे हैं उनसे उत्पादित सौर ऊर्जा का उपयोग उन भवनों में हो रहा है या नहीं जिनकी छत पर ये पैनल

लगाए गए हैं? कुछ लोगों ने हाँ में, कुछेक ने ना में और बाक़ी ने मैं नहीं जानता की मुद्रा में इस प्रश्न का जवाब दिया. फिर एक नया प्रश्न सामने आया. इनमें से एक व्यक्ति ने सवाल दागा कि आख़िर ये सौर पैनल लगवाया किसने है ? जेएनएसी ने लगवाया है, ज़िला प्रशासन ने लगवाया है, ऊर्जा विभाग ने लगवाया है या ज़ेडा (झारखंड रिन्युवेबुल एनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी) ने लगवाया है? कुछ देर के लिए माहौल में सन्नाटा छा गया. एक सज्जन ने कहा कि इस बारे में सही जानकारी लेकर मैं कल बताउँगा. कल इसी समय हम लोग इसी स्थान पर इकट्ठा होंगे और मैं या तो सटीक जानकारी लेकर इस सवाल का जवाब आपके सामने रखूँगा या किसी ऐसे जानकार व्यक्ति को लेकर आपके सामने आउंगा जो इस बारे में सही जानकारी हमें दे सके.

मैं रात भर उहापोह में रहा. पूरी रात मेरी पलकों में कटी. सोचता रहा कैसी जानकारी मुझे यहाँ स्थापित सौर ऊर्जा उत्पादन और ऊर्जा के सदुपयोग–दुरूपयोग के बारे में कल मिलेगी. कल कौन ऐसा व्यक्तित्व मेरे प्रांगण मे आएंगे जो इस बारे में जानकारी देंगे. मैं यह कहूँ कि पूरी रात जगा रहा, नींद पलकों से दूर रही तो अतिशयोक्ति नहीं होगी. मैं यह सोच कर पुलकित होते रहा, रोमांचित होते रहा कि कोई विशेष सज्जन कल मेरे प्रांगण में पधारने वाले हैं. सुबह हुई, दोपहर बीता, शाम ढलने के पहले फिर कल वाला वही समूह मेरे प्रांगण में आ धमका. उनके साथ सांवले, छरहरे बदन वाले एक बुजुर्ग दिख रहे व्यक्ति थे. अपने साथ उन्हें लेकर आए व्यक्ति ने बाक़ी सबसे उनका परिचय कराया, बताया कि आप श्री जय नारायण सिंह जी हैं. भाजपा के क़द्दावर नेता हैं. आप एक समय टेल्को में सशक्त मज़दूर आंदोलन का आंख–नाक–कान बने थे. मज़दूर आंदोलन का सशक्त हिस्सा बने थे. टेल्को के इस मज़दूर आंदोलन में आपकी सेवा चली गई. जन सेवा में आपने बेरोज़गारी के दंश को भुला दिया. भारतीय जनता पार्टी की राजनीति में आपने शोहरत हासिल किया. एकीकृत बिहार के दिनों में पूर्वी सिंहभूम जिला के ज़िलाध्यक्ष बने, प्रदेश कार्यसमिति का पद सुशोभित किया. फिर बस्ती विकास समिति का गठन किया. इसके माध्यम से जमशेदपुर की जनसमस्याओं को स्वर दिया. मालिकाना हक की मांग उठाया. कर्तव्य पथ पर निश्छल, निर्विकार, निःस्वार्थ भाव से बढ़ते रहे. कई व्यक्तियों को आपके सशक्त कंधों ने सहारा दिया, कहाँ से कहाँ पहुँचाया, फ़र्श से अर्श तक की यात्रा करा दी. शून्य से शिखर तक पहुँचा दिया. नींव का पत्थर के मुहावरा को आपने सार्थक किया, साकार किया. कंगूरों की चमक दमक आपके व्यक्तित्व की आभा को फीका नहीं कर पाई., आजीवन कर्तव्य पथ पर मनसा–वाचा–कर्मणा गतिमान रहे. ''ना काहू से दोस्ती ना क़ाहू से बैर'' के

भाव को अपने व्यवहार से सार्थकता प्रदान करते रहने वाले इस अल्पभाषी, मृदुभाषी, शांत स्वभाव वाली यह शख़्सियत परिचय पूरा होते ही उस विषय पर आ गई जिसके लिए उन्हें मेरे प्रांगण में विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था. विषय को इन्होंने अतिसंक्षेप में हम सबके सामने रखा. इनके सारगर्भित वक्तव्य से टाऊन हॉल, सोन मंडप, यात्री निवास की छतों पर लगे सौर ऊर्जा पैनलों से उत्पादित सौर ऊर्जा के दुरूपयोग की कहानी सामने आ गई. सुनकर मैं हतप्रभ रह गया. संविधान की शपथ लेकर राजकीय सत्ता के शीर्ष तक पहुँचने वाले लोग जब नीतियों को, नियमों को, क़ानूनों को क्षुद्र स्वार्थ में तोड़ने मरोड़ने लगते हैं, सरकारी सम्पत्तियों को अपनी संपत्ति मानकर मनमाना उपयोग करने लगते हैं और शासन इस ओर से आँख मूँद लेता है तभी ऐसा संभव होता है जैसा श्री जे एन सिंह जी ने हमें बताया.

वे धारा प्रवाह बोलते गये. हम सभी दत्तचित्त होकर सुन रहे थे. मैं भी निर्विकार भाव से इस त्यागमूर्ति सदृश व्यक्तित्व को एक टक निहार रहा था और ध्यान से सुन रहा था. वे बता रहे थे कि 2018 में झारखंड सरकार के ऊर्जा विभाग ने सौर ऊर्जा के उत्पादन और उपयोग के लिए एक सोलर रूफ टॉप नीति बनाया. इसकी कंडिका 7.3.1 के तहत प्रावधान किया गया कि झारखंड रिन्युएबुल एनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी (ज़्रेडा) द्वारा राज्य के सभी सरकारी भवनों की छतों पर सौर ऊर्जा पैनेल स्थापित किये जाएंगे. मगर एक शर्त रहेगी कि इससे उत्पादित सौर ऊर्जा का उपयोग केवल उसी भवन के लिए किया जाएगा जिस पर ये सौर पैनल लगाए जाएँगे. यानी इससे उत्पादित सौर ऊर्जा का व्यापार नहीं होगा, इसकी खरीद बिक्री नहीं होगी. इसे अन्यत्र नहीं भेजा जाएगा. इस नीति के तहत पूरे झारखंड में सरकारी स्कूलों, अस्पतालों, पुलिस थानों, सरकारी कार्यालयों की छतों पर सोलर पैनल लगाए गये, इनसे उत्पादित सौर बिजली का उपयोग इन भवनों में होने लगा. पूर्वी सिंहभूम ज़िला के पुलिस थानों, ज़िला एवं प्रखंड स्तर तक के सरकारी कार्यालयों में भी सौर पैनल लगाए गये. इसी तरह जमशेदपुर के सोन मंडप, यात्री निवास और टाऊन हॉल की छतों पर भी सौर पैनल लगे, इन सौर पैनलों की क्षमता 42 किलोवाट सौर बिजली पैदा करने की थी. राज्य भर में जिन भवनों की इमारतों अथवा परिसरों में सौर पैनल लगे उन सभी में इसका उपयोग उन भवनों में ही हो रहा है. मगर जमशेदपुर के टाऊन हॉल, सोन मंडप, यात्री निवास की छतों पर लगे सौर पैनलों से उत्पादित सौर ऊर्जा के साथ ऐसा नहीं हुआ. यहाँ उत्पादित बिजली का इस्तेमाल इन भवनों में नहीं होकर सूर्य मंदिर, पार्क और इसके आसपास के स्थलों के लिए हुआ. 2018 से अब तक होता रहा. जमशेदपुर पूर्वी क्षेत्र से निर्वाचित

होने के बाद विधायक सरयू राय ने इन भवनों से होने वाली आय के बारे में जानकारी लेना शुरू किया तब जाकर यह बात सामने आई. इस बात की सत्यता परखने के लिये श्री राय ने विधानसभा में एक सवाल पूछा. यह सवाल अल्पसूचित प्रश्न के रूप में सरकार को उत्तर देने के लिए दिनांक 3 अगस्त 2022 को सूचीबद्ध हुआ. उत्तर में सरकार ने स्वीकार किया कि सोन मंडप, यात्री निवास और टाऊन हॉल की छतों पर लगे सोलर पैनलों से उत्पादित सौर बिजली का उपयोग उन भवनों में नहीं बल्कि सूर्य मंदिर और पार्क में हो रहा है. जे.एन. सिंह जी ने प्रश्नोत्तर की प्रति पढ़कर सबको सुनाया. इसका नतीजा हुआ कि ऐसी सौर ऊर्जा का उपयोग जिन जगहों पर नियमानुसार नहीं होना चाहिए था, वे जगहें तो सौर ऊर्जा से गुलजार रहीं. मगर टाऊन हॉल पर जुस्को के बिजली बिल का करीब 45 लाख रुपया बकाया होने के कारण जुस्को ने टाउन हॉल की बिजली काट दिया. टाउन हॉल की बिजली आज भी कटी हुई है. इसी तरह यात्री निवास और सोन मंडप पर भी क्रमशः तीन लाख रुपया और पाँच लाख रुपया का बिजली बकाया स्वार्थपूर्ण राजनीतिक निर्णयों के प्रतिकुल आर्थिक प्रभाव का पर एक नमूना है.

चर्चा के दौरान जय नारायण बाबू ने अन्य कई बातें बताया. उन्होने कहा कि ढेर सारी बातें आप तक पहुँचाने का मन है. मसलन, मोहरदा पेयजल परियोजना के साथ क्या हुआ? मालिकाना हक़ के मामले में कैसा छल हुआ? जनाधिकार के संदर्भ में म्युनिसिपैलिटी/ औद्योगिक नगर का पेंच अब तक क्यों नहीं सुलझ पाया? बस्ती विकास समिति कैसे आई? कैसे परवान चढ़ी? कैसे दम तोड़ दिया? पिछले ढाई दशकों में शहर का क्या होना था क्या हो गया? जमशेदपुर को शंघाई बनाने की घोषणा करने वालों के हाथ में शासन की बागडोर आई तो यह घोषणा कैसे हवा–हवाई हो गई? जमशेदपुर की राजनीति कैसे व्यवसाय में बदल गई? कैसे शासन–प्रशासन के तेवर समय–समय पर असंवैधानिक तत्वों की अराजक गतिविधियों एवं निर्णयों के सामने ढीला होते रहे? कैसे यह औद्योगिक शहर अनियमितताओं का शहर बन गया? इनसे जुड़े हैरत अंगेज़ वाक़यों की तफ़सील से चर्चा शनैः शनैः उन्होंने किया. बताया कि एक लंबी दास्तान का साक्षी रहा हूं मैं. परंतु इन सबको एक साथ समेटकर मैं आज की बातचीत को संदर्भ से परे नहीं ले जाना चाहता. कभी मौका मिला तो मैं या कोई और शख़्स ज़िन्दगी के किसी न किसी मोड़ पर कभी न कभी एक साथ या अलग अलग इनसे जुड़ी शेष दास्तानों से आपको रू–ब–रू ज़रूर कराएगा. पर समय की सीमा है, आज इतना ही, शेष फिर कभी. इतना कहकर उन्होंने हमसे विदा लिया. अचानक एक रोज किसी ने बताया कि जय नारायण बाबू इस दुनिया में नहीं रहे. कैंसर ने उनका जीवन

लील लिया. सुनकर मैं स्तब्ध रह गया. एक निर्भीक, स्पष्टवादी, अनुभवी व्यक्तित्व नहीं रहा. मेरे जड़ मन में भी ख़ालीपन का एहसास हुआ. वो हमेशा याद आएंगे. पुण्यात्मा को जोहार.

कहावत है कि क़ानून के हाथ लंबे होते हैं, समय बलवान होता है. लंबे समय तक विधायक, मंत्री, मुख्यमंत्री रहने के कारण शासन, प्रशासन पर जमा रौब–दाब समय के साथ ढीला पड़ने लगा. जो शासन–प्रशासन सत्ता के प्रोटोकॉल में हाथ बांधें खड़ा रहता था उस शासन प्रशासन के हाथ में विधानसभा के नियमन के अनुसार सरकार के विधि सम्मत निर्देश पहुँचने लगे तो शुरुआती आनाकानी और लिहाज़ प्रेरित शिथिलता के बाद अंततः उन्हें भी सच को सच मानना पड़ा. विधानसभा में उठे सवालों के सामने सरकार को और प्रशासन को विधि सम्मत रास्ता अख़्तियार करना पड़ा. विधानसभा ने सरकार को नियमन दिया, तदनुरूप सरकार ने ज़िला प्रशासन को निर्देशित किया और ज़िला प्रशासन ने सम्यक् आदेश जारी किये. इस परिसर की सरकारी ज़मीन और सरकारी खर्चे पर बनी इमारतों, चिल्ड्रन पार्क आदि पर से अवैध क़ब्ज़ा हटाने का निर्देश जारी हुआ. निदेशानुसार जमशेदपुर अक्षेस ने इन्हें अपने क़ब्ज़े में ले लिया. भले ही दो–ढाई साल का समय इसमें लगा पर मेरे प्रांगण का इस्तेमाल करने वाले बच्चों और उनके अभिभावकों से अवैध वसूली का धंधा अंततः बंद हो गया. इसके लिए अनुमंडलाधिकारी सहित अन्य अधिकारियों को काफ़ी मशक़्क़त करनी पड़ी. स्पष्ट आदेश जारी करना पड़ा. सरकारी परिसंपत्तियों और भूखंडों पर क़ब्ज़ा क़ायम रखने की उदंड और छिछोरी जिद का सामना प्रशासन ने जिस शालीनता से किया वह क़ाबिले तारीफ़ है. एकाध संरचनाएँ आज भी स्वार्थी समूहों के क़ब्ज़े में हैं. ये फिर से अपने पंख फड़फड़ा रहे हैं. मुझे भरोसा है कि आज नहीं तो कल ये परिसंपत्तियाँ भी प्रशासन के क़ब्ज़े में आ जाएँगी. इस संदर्भ में विधानसभा में उठे सवालों के सरकारी उत्तर और सरकार तथा प्रशासन के प्रासंगिक आदेश–निर्देश इस संदर्भ में जिला प्रशासन का मार्गदर्शन करते रहेंगे.

इस बीच मेरे पास सूचनाएँ पहुँच रही हैं कि इस क्षेत्र के विधायक ने प्रशासन के सहयोग से मेरे प्रांगण परिसर को नया कलेवर देने का प्रयास आरम्भ कर दिया है. वे इसे क्रीड़ा उद्यान का स्वरूप देना चाहते हैं. क्रीड़ा की गतिविधियाँ अभी तक केवल मेरे (चिल्ड्रन पार्क) प्रांगण परिसर तक सीमित हैं. विधायक निधि से स्वीकृत खेल परियोजनाओं के स्वरूप ग्रहण करते ही क्रीड़ा गतिविधियाँ परिसर के चहुँ ओर फैल जाएँगी. जिन भूखंडों/संरचनाओं पर अवैध क़ब्ज़ा था, जिनसे होने वाली

कमाई सरकारी खजाना में नहीं जाकर निहित स्वार्थी जेबों के हवाले हो जाती थीं वे अब सरकार के अधीन हो जाएँगी, इन क्रीड़ा गतिविधियों से होने वाली आमदनी राजकीय खजाना को समृद्ध करेगी. मेरे प्रांगण परिसर में टेबुल टेनिस, विलियर्ड, कैरम, बास्केट बॉल, हैंड बॉल, वालीबॉल, कबड्डी, तैराकी आदि खेल शीघ्र आरंभ हो जायेंगे.

पर जिन्हें अवैध कमाई का चस्का लगा हुआ है, हड़पू गोत्र का यह कब्जा कुटुंब फिर से सक्रिय हो गया हैं, क्रीड़ा उद्यान के विरोध पर उतारु हो गया है, अफवाह फैला रहा है. मशाल जुलुस निकालकर और उपायुक्त के सामने प्रदर्शन कर प्रशासन पर दबाव देना शुरु किया है. यह निहित स्वार्थी समूह विधायक सरयू राय पर सूर्य मंदिर की मर्यादा हनन करने, शंख मैदान की अस्मिता नष्ट करने, छठ पर्व की आस्था पर चोट करने, धर्म विरोधी काम करने का मिथ्या आरोप लगा रहे हैं. अब तो इन्होंने तोड़–फोड़ भी शुरु कर दिया है. बच्चों के लिये बने नये स्वीमिंग पूल को उन्होंने नुकसान पहुँचाया है. भारतीय जनतंत्र मोर्चा इसका प्रतिकार में आगे आ गया है, इस संबंध में अखबारों की सुर्खियों में छपी एवं इलेक्ट्रोनिक माध्यमों द्वारा प्रसारित खबरें भी मेरे प्रांगण में चर्चा का विषय बनी हुई हैं. भारतीय जनतंत्र मोर्चा ने इस बारे में एक पत्रक प्रकाशित कर जनता के समक्ष वास्तविक स्थिति स्पष्ट किया है. इस पत्रक में बताया है कि जो खेल सुविधाएँ जमशेदपुर में केवल टाटा स्टील के पास हैं, विधायक सरयू राय उन्हें आम जनता की सुविधा के लिए सिदगोड़ा क्रीड़ा परिसर में ला रहें हैं. सिदगोड़ा के मेरे प्रांगण में वे इन्डोर–आउटडोर गेम का आकर्षक और उपयोगी सेंटर बनाना चाह रहें हैं परन्तु लंबे समय से यहाँ कब्जा की मानसिकता रखने वाले इसका विरोध कर रहे हैं. यह पत्रक कई लोगों द्वारा मेरे प्रांगण में पढ़कर सुनाया जा रहा है, जो निम्नवत है :–

जमशेदपुर की जनता और भाजपा के कार्यकर्ताओं से भारतीय जनतंत्र मोर्चा की खुला अपील

पूर्व मुख्यमंत्री, पूर्व विधायक श्री रघुवर दास के पिछलग्गुओं की झूठी–फरेबी अफ़वाहों से होशियार रहें

बहनों और भाइयों,

विगत कुछ दिनों से श्री रघुवर दास और उनके पिछलग्गू अफ़वाह फैला रहे हैं कि जमशेदपुर पूर्वी के विधायक सरयू राय सिदगोडा सूर्य मंदिर का अपमान कर

रहे हैं. शंख मैदान में बास्केट बॉल कोर्ट बना रहे हैं, छठ तालाब के स्वीमिंग पुल बना रहे हैं.वे धर्म विरोधी हैं आदि आदि.

सच्चाई क्या है?

1. सूर्य मंदिर और शंख मैदान :– *सूर्य मंदिर परिसर से सटे शंख मैदान है. विधानसभा चुनाव हार जाने के बाद श्री रघुवर दास ने दोनों के बीच ग्रिल बाउंड्री बनाकर उन्हें अलग कर दिया. इसके लिए उन्होने 2020–21 मे राज्यसभा सांसद श्री महेश पोद्दार की सांसद निधि से 15 लाख रूपया लिया और कोविड के बीच इस पैसे से सूर्य मंदिर की बाउंड्री बनवा दिया. श्री सरयू राय इसका आधुनिकीकरण कर शंख को अध्यात्मिक मर्यादा के अनुरूप प्रतिष्ठित करना चाह रहे हैं ।*

2. सरयू राय की पहल : *पहले भी शंख मैदान का सौंदर्यीकरण विधायक निधि और पर्यटन विभाग की निधि से हुआ था. शंख मैदान में पार्क बना था. पार्क के बीच में शंख बनाकर ज़मीन पर सुला दिया गया था. मैदान में जाने के लिए रघुवर जी की सूर्य मंदिर समिति के लोग प्रति व्यक्ति 5 रूपया का टिकट काटते थे. विधायक बनने के बाद सरयू राय ने उनका टिकट काटना बंद करा दिया.*

श्री सरयू राय ने देखा कि सूर्य मंदिर की बाउंड्री के बाहर शंख मैदान उद्यान मे घूमने वाले जूता–चप्पल पहने शंख पर चढ़ते हैं, बैठते हैं. बच्चे कूदते–फाँदते हैं. जिस शंख का हमारी सनातन परंपरा मे धार्मिक महत्व है उस शंख का यहाँ वर्षों से घोर अपमान हो रहा है. उन्होंने शंख मैदान को सुंदर बनाने की योजना बनाया जिसमें उंचा चबुतरा बनाकर शंख को उसके उपर रखना है. इसके अलावा श्रीमद्भागवत गीता में वर्णित भगवान श्री कृष्ण के पाँचजन्य एवं अन्य शंखों की आकृति शंख मैदान में बनाना इस योजना में शामिल है.

इसके पहले भी कई बार सरकारी निधि से शंख मैदान का सौंदर्यीकरण हुआ है. विधायक निधि से इन तालाबों में चलाने के लिए दो बड़े पैडल बोट ख़रीदे गये हैं. ये दोनों बोट वहीं पर टूटे पड़े हैं. श्री राय ने अपनी विधायक निधि से बच्चों के लिए दोनों तालाबों के लिए चार–चार छोटी पैडल बोट ख़रीदने की योजना स्वीकृत कराया है. अब रघुवर समर्थक इसका विरोध कर रहे है. कह रहे हैं कि तालाब में पैडल बोट नही चलने देंगे. तालाबों में बोट चलने से छठ व्रत का अपमान होगा. आश्चर्य है, आपने बोट चलवाया तो ठीक हम चलवा रहे हैं तो ग़लत.

3. छठ तालाब में स्वीमिंग पुल : *रघुवर दास समर्थक झूठी अफ़वाह फैला रहे हैं कि सरयू राय छठ तालाब में स्वीमिंग पुल बनवा रहे हैं. वस्तुस्थिति यह है*

कि सरयू राय ने चिल्ड्रन पार्क के बग़ल में बच्चों का एक स्वीमिंग पुल अपनी विधायक निधि से पहले से बनवाया है. इसके बग़ल में उन्होंने हाफ़ ओलिम्पिक साईज़ का एक नया स्वीमिंग पुल बनाने का प्रस्ताव खेल विभाग को भेजा है. रघुवर समर्थक ग़लत बयानी कर रहे है, झूठ बोलकर भ्रम फैला रहे हैं.

4. बास्केट बॉल कोर्ट : *रघुवर दास समर्थक एक और झूठ फैला रहे हैं कि विधायक सरयू राय शंख मैदान में बास्केट बॉल कोर्ट बनवा रहे हैं. सच्चाई है कि बास्केट बॉल कोर्ट बन तो रहा है मगर वह टाऊन हॉल के नीचे वाले मैदान में बन रहा है, सरयू राय की विधायक निधि से बन रहा है. इस तरह इनकी यह अफ़वाह भी झूठ है.*

5. चिल्ड्रेन पार्क : *तालाब के बाद की ज़मीन पर 2009 के पहले पर्यटन विभाग ने चिल्ड्रन पार्क बनाया. 2010 में इसका सौंदर्यीकरण सरकार के पैसा से हुआ. फिर 2015 में पुनः इसका आधुनिकीकरण हुआ. दोनों बार पार्क का विस्तार हुआ, नए उपस्कर लगे. रघुवर समर्थक चिल्ड्रन पार्क में खेलने जाने वाले बच्चों और उनके अभिभावकों से प्रतिदिन प्रति व्यक्ति 5 रूपया टिकट का वसूलने लगे. जमशेदपुर पूर्वी से विधायक बनने के बाद श्री सरयू राय ने 5 रूपया शुल्क वसूली बंद कराना चाहा. रघुवर दास की सूर्य मंदिर समिति ने विरोध किया. काफ़ी मशक़्क़त के बाद एसडीओ ने धमकाया तब इन्होंने फ़रवरी 2023 से टिकट काटना बंद किया.*

6. चिल्ड्रन पार्क की पुनः स्थापना : *चुनाव हार जाने के बाद रघुवर जी के विधायक प्रतिनिधि पवन अग्रवाल आदि 2020–21 में चिल्ड्रेन पार्क को वहाँ से उठाकर कहीं ले जाने लगे. विरोध हुआ तो उन्होंने बग़ल के मैदान में छोड़ दिया. ज़िला खेल पदाधिकारी ने इनपर मुक़दमा दर्ज किया है जो सिदगोडा कांड संख्या 15/2022 है. श्री सरयू राय की विधायक निधि से चिल्ड्रेन पार्क को नए सिरे से सजाया गया है. अब चिल्ड्रेन पार्क फिर से गुलज़ार है. वहाँ जाने के लिए कोई प्रवेश शुल्क नही है.*

7. सरयू राय करना क्या चाह रहे हैं?

सरयू राय टाउन हॉल से सूर्य मंदिर के बीच के मैदान को इंडोर एवं आउटडोर क्रीड़ा परिसर के रूप में विकसित करना चाहते हैं. अलग अलग स्थान पर टेबुल टेनिस, कैरम, बिलियर्ड्स , बास्केटबॉल, स्वीमिंग, जल क्रीड़ा, बैडमिंटन, हैंडबाल, बॉलीबाल, कबड्डी खेलने का कोर्ट बनाना चाहते हैं. ताकि टाटा स्टील परिसर की

खेल सुविधाओं की तरह सिदगोडा में एक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स बनाना चाहते हैं ताकि आम लोग सस्ते दर पर विभिन्न खेलों का आनन्द उठा सकें.

8. श्री रघुवर दास और उनके समर्थक इसका विरोध क्यों कर रहे हैं?

*विरोध का **पहला कारण** है कि इन्होंने सूर्य मंदिर की आड़ में व्यापार करना शुरू कर दिया था. सोन मंडप, यात्री निवास की बुकिंग कर पैसा अपने पास रखना, शंख मैदान पार्क में जाने वालों से शुल्क लेना, टिकट काटना,. चिल्ड्रन पार्क में प्रवेश करने वालों से 5/- रु. वसुलने के लिए टिकट काटना. इससे इन्हें साल में 90-95 लाख की आमदनी होती थी जो ख़त्म हो गई. ये फिर से इस पर क़ब्ज़ा करना चाहते हैं और अवैध कमाई करना चाहते हैं.*

***दूसरा कारण** है कि इन्होंने अभी भी यहाँ के दो सरकारी भवनों पर से कब्ज़ा नहीं हटाया है. दबाव बनाकर ये चाहते हैं कि समझौता में ये भवन उन्हें मिल जाएँ. एक भवन में ये मंदिर का ऑफिस चलाते हैं और एक दो मंज़िला भवन इसके पास है जिसका वे व्यवसायिक उपयोग करते हैं.*

***तीसरा कारण** है कि अब उनका पोल खुल गया है. 20 साल से विधायक निधि के नाम पर सूर्य मंदिर के समीप कतिपय ऐसी संरचनाएँ बना दिखाया गया है जो वास्तव में वह वहाँ है ही नही. इनके निर्माण में लगे लाखों रुपये आखिर गए कहाँ ?*

***चौथा कारण** है कि सूर्य मंदिर परिसर पर इन्होंने पहले के धर्मप्रेमी श्रद्धालुओं को खदेड़कर क़ब्ज़ा किया है. यह राज खुलेगा, सही बात सामने आएगी कि वर्ष 2000 के पहले किन लोगों ने मंदिर का निर्माण किया था. भूपत भाई जैसे लोगो के साथ क्या सलूक हुआ, ज़ैप-6 के वे जवान कहाँ भगाए गये जिन्होंने मंदिर की नींव रखा था ? सभी मददगारों को इन्होंने अपमानित किया. धीरे-धीरे ऐसे सभी लोग वहाँ से बाहर कर दिये गए. श्री बाबूलाल मरांडी जिन्होंने झारखंड के पहले मुख्यमंत्री के रूप में यहाँ बने तालाबों एवं कतिपय अन्य संरचनाओं का 2002-03 में उद्घाटन किया उनका शिलापट्ट तक वहाँ नहीं है.*

***पाँचवाँ कारण** है कि यह बात खुलेगी कि वर्ष 2000 में दूसरी बार विधायक बनने के बाद मंदिर के असली निर्माणकर्ताओं ने श्री रघुवर दास को एक कार्यक्रम में अतिथि के रूप में बुलाया था. इसके बाद ये ऐसा सटे कि असली निर्माताओं को धकियाकर मंदिर प्रांगण पर अपना क़ब्ज़ा कर लिया.*

***छठा कारण** है कि सूर्य मंदिर परिसर के अधिकांश भवन एवं मंदिर सरकारी*

पैसों से बने हैं. सरकार जिस दिन चाहेगी धार्मिक न्यास बोर्ड इस पर क़ब्ज़ा जमा लेगा. इनकी छुट्टी हो जाएगी.

मित्रों, आप सोचिए कि असलियत क्या है. रघुवर दास और उनके समर्थक वास्तव में अपने स्वार्थ की लड़ाई लड़ रहे हैं. सूर्य मंदिर के सामने की संपत्ति पर क़ब्ज़ा करना चाहते हैं. दूसरी ओर सरयू राय चाहते हैं कि यहाँ सिदगोडा क्रीड़ा उद्यान बने, सिदगोडा खेल परिसर बने, जनता इसका मालिक रहे. स्वार्थियों का षड्यंत्र पहचानिए. सरकारी संपत्ति को हड़पे जाने से बचाइए. फरेबियो का मंसूबा चकनाचूर कीजिये.

निवेदक :– भारतीय जनतंत्र मोर्चा, जमशेदपुर, महानगर जिला

❖ ❖ ❖

मेरी उम्र 15 वर्ष से अधिक हो गई. 15 से 20 वर्ष तक के अफ़साना का मैं प्रत्यक्ष गवाह हूँ. इस बीच का बदलाव मैंने अपनी आँखों से देखा है. अपने जीवन के अल्प काल में मैंने सुना और जाना बहुत कुछ है. भुगता भी कम नहीं हूँ. अपना कटु–मधु अनुभव कितना कहूँ. जितना भी कहूँ कम होगा. इस काल खंड में स्थानीय राजनीति और प्रभावशाली राजनीतिक कुनबे के बदलते चरित्र ने मुझे चकित किया है. नाम बड़े और दर्शन छोटे, कहीं पे निगाहें कहीं पे निशाना जैसी कहावतें मेरे सामने घटित होते रही हैं. हड़पू गोत्र और अवैध क़ब्ज़ा कुटुम्ब की कारस्तानी उन्हीं की ज़बानी सुनता रहा हूँ. वे शेखी बघारते रहे हैं, सामने वाले पर रौब जमाते रहे हैं, आगे की योजना बनाते रहे हैं और मैं भी उन्हें सुनता रहा हूँ. उसी में से जो कुछ याद रहा आपको सुना रहा हूँ.

जमशेदपुर में अनियमितताओं का दौर कैसे आरम्भ हुआ, टाटा स्टील और सरकारी ज़मीन पर क़ब्ज़ा जमाने और इसके माध्यम से अवैध कमाई करने की सुनियोजित साज़िश कैसे आरम्भ हुई, किसने कितना क़ब्ज़ाया, कहाँ कहाँ हड़पा, किसको साझेदार बनाया, किसे ठेंगा दिखाया, कितना कमाया, कैसे कमाया, किस किस से कमाया, कोई राह का रोड़ा बना तो कैसे निपटाया, आपराधिक गिरोहों–रंगदारों को कैसे साधा, उन्हें किस भाँति प्रोत्साहित किया, कब कब राजनीतिक संरक्षण दिलवाया, कौन किससे वसूली करता है, कौन उद्योगपति/व्यवसायी अगला टार्गेट हैं, किस बिल्डर को/ किस संवेदक को कहाँ पर मदद कराना है, कैसे ठेका दिलवाना है, बदले में क्या लेनदेन हुआ है/होना है आदि चर्चाएँ चटखारे लेकर मेरे सामने होते रहती थीं. कोई शिव सिंह बगान का उद्धरण पेश करता, कोई लाँग

टॉम बस्ती का ज़िक्र करता, कोई भालूबासा सामुदायिक शौचालय तोड़कर उस पर कब्जा की कहानी कहता, कोई सत्ता शीर्ष से संबंधों की दुहाई देता, कोई रंगदारों से रिश्ते का बखान करता. यह सुनकर मैं चकित होते रहता कि इनके रास्ते अलग, इनका पेशा अलग, इनका धंधा अलग, इनके बीच परस्पर गला काट प्रतिस्पर्धा भी, पर इनका शक्ति स्रोत एक. सबकी जान एक तोते के भीतर. सब एक विष वृक्ष की शाखायें, लोभ लाभ सबका आधार, सबका पोषक एक, सूत्रधार एक.

किसी बस्ती/ बाज़ार का नामकरण अपने आका के नाम पर कर देने, किसी बसी हुई बस्ती को सरकारी योजना के बहाने उजाड़ देने, कहीं सामुदायिक शौचालय को तोड़कर अपना कार्यालय बना लेने, कंपनी के विस्थापितों के लिए आवंटित रूईया पहाड़ की ज़मीन हथिया कर बहुमंज़िली आलीशान इमारत खड़ा कर लेने, जैसी योजनाओं की चर्चा मेरे प्रांगण में अक्सर होते रहती थी. कई बार लोग–बाग चर्चा करते रहते कि हड़पू गोत्र के किस किरदार ने कहाँ कितना बड़ा हाथ मार लिया, किस अपराधी गिरोह को कैसे साध लिया, किस थानेदार को कैसे सेट कर लिया, कैसे बिना नक़्शा पास किये बहुमंज़िला भवन खड़ा करा दिया, कैसे नक़्शा विचलन की शिकायत को जेएनएसी पर धौंस जमाकर ख़त्म करा दिया, कोई टेढिया अफ़सर नहीं माना तो कैसे राँची जाकर उसकी हेकड़ी दुरुस्त करा दिया. यह सब सुनकर मैं दंग रह जाता, यही सोचते–विचारते रहता कि क्या होगा जब रखवाला ही चोर बन जाए, जब मेड़ ही खेत खाने लगे, जब क़ानून बनाने के लिए चुना जाने वाला ही क़ानून तोड़ने लगे, जन प्रतिनिधि ही जनता के हितों की सौदेबाज़ी करने लगे. लोकतांत्रिक शासन पद्धति के ऐसे विरोधाभासी कृत्यों का ताना बाना अपने इर्द गिर्द बुना जाते देखकर मैं हैरान हो ज़ाया करता.

मैं खुश हूँ, आह्लादित हूँ, मेरी प्रसन्नता का पारावार नहीं है. केवल इसलिए नहीं कि इसका सर्वाधिक लाभ मुझे मिलेगा, मैं उजड़ने से बच जाऊँगा, बल्कि इसलिये भी कि अब मैं एक विस्तारित क्रीड़ा परिवार का सदस्य बन जाऊँगा, फलूँगा, फूलूंगा, इतराउंगा, इठलाऊँगा, क़ानून सम्मत हवा में साँस लूँगा. मेरी अभिलाषा है कि यह क्रीड़ा उद्यान परिसर आबाल वृद्ध के लिये सेवा संस्कार का केन्द्र बने. नशे का नाश हो, – खेल का विकास हो का मंत्र यहाँ के रग रग से गूंजता रहे. मैं कृतज्ञता से विभोर हो जाऊँ.

धन्यवाद, प्रणाम, जोहार